RNI No. 62592/95
email: u.p.observer@gmail.com

यू.पी.ऑब्ज़र्वर
साप्ताहिक

मोदीनगर (गाजियाबाद) वर्ष : 32 अंक : 12 सोमवार 23 से 29 जून, 2025 पृष्ठः 8 मूल्य : ₹3/=

योग और आयुर्वेदः समग्र स्वास्थ्य संजीवनी ...3

अंतरराष्ट्रीय योग दिवसः योग से हमें शांति की दिशा मिलती हैः पीएम मोदी

प्रधानमंत्री ने विशाखापट्टनम में 3 लाख लोगों और 40 देशों के राजनयिक के साथ किया योग

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को कहा कि दुनिया किसी न किसी तनाव से गुजर रही है, कितने ही क्षेत्रों में अशांति और अस्थिरता बढ़ रही है और ऐसे में योग से हमें शांति की दिशा मिलती है। उन्होंने यह भी कहा कि योग हमें दुनिया को जोड़ने का संदेश देता है और यह सीमाओं, पृष्ठभूमि, उम्र या क्षमता से बंधा नहीं है।

प्रधानमंत्री ने कहा, ''चाहे सिडनी ओपेरा हाउस की सीढ़ियां हों, या एवरेस्ट की चोटी हो, या फिर समंदर का विस्तार हो, हर जगह से एक ही संदेश आता है कि योग सभी का है, और सभी के लिए है।''

प्रधानमंत्री मोदी ने यहां 11वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि यह दिन मानवता के लिए उस प्राचीन प्रथा की शुरूआत का प्रतीक है जहां आंतरिक शांति वैश्विक नीति बन गई है। प्रधानमंत्री ने कहा, 'दुर्भाग्य से आज पूरी दुनिया किसी न किसी तनाव से गुजर रही है। कितने ही क्षेत्रों में अशांति और अस्थिरता बढ़ रही है। ऐसे में योग से हमें शांति की दिशा मिलती है। योग एक 'पॉज बटन' है जिसकी मानवता को आवश्यकता है , जिससे कि वे खुलकर सांस ले सकें, जीवन में संतुलन बना सकें तथा पुनः संपूर्ण बन सकें।'

पीएम मोदी ने कहा, 'आइए, हम सब मिलकर योग को एक जन आंदोलन बनाएं, जो विश्व को शांति, स्वास्थ्य और समरसता की ओर ले जाए। जहां हर व्यक्ति दिन की शुरूआत योग से करे और जीवन में संतुलन पाए। जहां हर समाज योग से जुड़े और तनाव से मुक्त हो। जहां योग मानवता को एक सूत्र में पिरोने का माध्यम बने।'

प्रधानमंत्री ने कहा, 'मेरा दुनिया से अनुरोध है कि आइए, इस योग दिवस को मानवता के लिए योग 2.0 की शुरूआत का प्रतीक बनाएं जहां आंतरिक शांति वैश्विक नीति बन जाए।'

मोदी ने कहा कि योग सभी का है, और सभी के लिए है। यह सीमाओं, पृष्ठभूमि, उम्र या क्षमता से बंधा नहीं है। इस साल अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की थीम 'एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग' है, जो एक गहरी सच्चाई को दशार्ता है कि धरती पर प्रत्येक इकाई का स्वास्थ्य परस्पर जुड़ा हुआ है।

पीएम ने कहा कि मानव कल्याण उस मिट्टी के स्वास्थ्य पर निर्भर करता है जो भोजन उगाती है, उन नदियों पर निर्भर करता है जो पानी देती हैं और उन जानवरों के स्वास्थ्य पर निर्भर करता है जो पारिस्थितिकी तंत्र को साझा करते हैं तथा उन पौधों पर निर्भर करता है जो पोषण करते हैं।

योग हमें इस परस्पर जुड़ाव के प्रति जागरूक करता है। मोदी ने कहा कि योग दुनिया को जोड़ता है और सिखाता है कि लोग अलग-थलग व्यक्ति नहीं हैं बल्कि प्रकृति का हिस्सा हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा, ह्ययोग एक महान व्यक्तिगत अनुशासन है। साथ ही, यह एक ऐसी प्रणाली है जो हमें 'मैं' से 'हम' की ओर ले जाती है। आइए, इस योग दिवस को मानवता के लिए योग की शुरूआत के रूप में चिह्नित करें, जहां आंतरिक शांति वैश्विक नीति बन गई है।'

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने दुनियाभर के राजनयिकों के साथ किया योग

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के मौके पर भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने भारत में मौजूद दुनियाभर के राजनयिक मिशनों के प्रतिनिधियों के साथ मिलकर योग किया। इस बार योग दिवस की थीम थी – 'एक धरती, एक स्वास्थ्य के लिए योग। इस कार्यक्रम का उद्देश्य योग के जरिए वैश्विक स्वास्थ्य और एकता का संदेश देना है। जयशंकर ने कहा कि योग न केवल भारत की प्राचीन परंपरा है, बल्कि यह पूरी दुनिया को जोड़ने वाली शक्ति बन गया है।

योग ने मुझे सक्षम बनाया- शिवराज सिंह

केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि मेरा एक भयानक हादसा हुआ था। मैं अस्पताल के बिस्तर पर लेटा था और सोचता था कि क्या मैं दूसरों की तरह चल पाऊंगा। योग ने मुझे इतना सक्षम बनाया कि आज मैं चल सकता हूं, घूम सकता हूँ, काम कर सकता हूं और ऐसा नहीं लगता कि मेरा शरीर घायल है।

मन और शरीर के बीच एकता लाता है योगः शाह

भारत ही नहीं दुनियाभर में आज अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जा रहा है। इस मौके पर भारत को दुनियाभर में योग सॉफ्ट पावर का प्रदर्शन करेगा। इस अवसर पर 191 देशों के 1,300 शहरों में योग को लेकर विभिन्न आयोजन किए जाएंगे। इन आयोजनों के माध्यम से देश की प्राचीन परंपरा और सौम्य शक्ति का प्रदर्शन किया जाएगा। विदेश मंत्रालय की सांस्कृतिक शाखा भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) की ओर से शुक्रवार को जारी एक बयान के अनुसार, पाकिस्तान में भारतीय उच्चायोग भी इस अवसर पर इस्लामाबाद में एक योग कार्यक्रम आयोजित करेगा।

राजनाथ सिंह बोले- योग से मिलती है शक्ति और धैर्य

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर उधमपुर में आयोजित कार्यक्रम में हिस्सा लिया और अपने विचार साझा किए। उन्होंने कहा कि हमारी सेनाओं ने दुनिया को दिखाया कि उन्होंने केवल आतंकवाद के ठिकानों को निशाना बनाया और संयम से काम लिया। उन्होंने कहा कि हम चाहें तो और भी बहुत कुछ नष्ट कर सकते थे, लेकिन हमने धैर्य दिखाया। योग हमें ऐसी ताकत और धैर्य देता है कि हम मुश्किल हालात में भी संयम नहीं खोते। रक्षा मंत्री ने योग की महत्ता बताते हुए कहा कि यह न केवल शारीरिक बल्कि मानसिक मजबूती भी देता है।

जेपी नड्डा बोले- योग ने बढ़ाई स्वास्थ्य और मानसिक जागरूकता

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के 11वें साल में हम एक नई जागरूकता देख रहे हैं। पिछले दस वर्षों में न केवल भारत में बल्कि पूरी दुनिया में लोग योग के महत्व को समझने लगे हैं। नड्डा ने बताया, 'योग सिर्फ शारीरिक व्यायाम नहीं है, बल्कि मानसिक व्यायाम भी है। यह हमें अपने अंदर की जागरूकता और सचेतनता से जोड़ता है। योग से स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य और चेतना में सुधार होता है। उन्होंने सभी से योग को अपनी दिनचर्या में शामिल करने की सलाह दी।

कुरुक्षेत्र में सीएम नायब सिंह सैनी और राज्यपाल ने स्वामी रामदेव के साथ किया योग

हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय और अन्य लोगों ने शुक्रवार को 11वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के मौके पर योग अभ्यास किया। यह कार्यक्रम योग गुरु स्वामी रामदेव के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया था। सभी ने कुरुक्षेत्र में एक साथ योग कर सेहत और आत्मिक शांति का संदेश दिया। बड़ी संख्या में लोगों ने इस मौके पर भाग लिया।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर गोरखनाथ मंदिर में सामूहिक योगाभ्यास

योग से भारत ने विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया : सीएम योगी

गोरखपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि योग भारतीय मनीषा की अनुपम देन है।योग को लोक कल्याण का माध्यम बनाकर भारत ने विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। यही वजह है कि आज 11वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर भारत ही नहीं बल्कि दुनिया के करीब 190 देश भारतीय योग की विरासत के साथ जुड़कर गौरवान्वित हो रहे हैं। सीएम योगी 11वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर शनिवार सुबह गोरखनाथ मंदिर में योगाभ्यास करने के पूर्व योग साधकों, प्रशिक्षुओं को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की बधाई दी। महंत दिग्विजयनाथ स्मृति सभागार में आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि योग भारत की ऋषि परंपरा का ऐसा मंत्र है जो स्वस्थ काया के साथ स्वस्थ मस्तिष्क भी उपलब्ध कराता है। भारतीय मनीषा ने योग के महत्व को प्राचीनकाल से ही विस्तृत रूप से अवगत कराते हुए कहा है, शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम (शरीर ही धर्म के पालन का साधन है)। सीएम योगी ने कहा कि मानव जीवन के चारों पुरुषार्थ धर्म, अर्थ काम, मोक्ष की प्राप्ति स्वस्थ शरीर से ही संभव है। स्वस्थ शरीर ही संसार सांसारिक उत्कर्ष और आध्यात्मिक उन्नयन का माध्यम है। धनोपार्जन से लोक कल्याण हो, कामनाओं की पूर्ति हो या फिर मुक्ति का मार्ग, इन सबके लिए स्वस्थ शरीर ही माध्यम है।

उन्होंने कहा कि धर्म पालन का साधन बनाने और चारों पुरुषार्थ की प्राप्ति के लिए शरीर को स्वस्थ रखने का कार्य योग से होता है। इसी योग को भारती ने लोक कल्याण का माध्यम बनाया और फिर इसके जरिये विश्व कल्याण का मार्ग भी प्रशस्त किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज योग के अलग-अलग आयाम देखने को मिलते हैं। भारतीय मनीषा ने योग के माध्यम से चेतना के उच्च आयाम से दुनिया को अवगत कराया। व्यक्तित्व विकास से लेकर ब्रह्मांड के रहस्यों को उद्घाटित करने तक योग के समृद्ध ज्ञान को विरासत के रूप में वेदों, उपनिषदों, पुराणों, स्मृतियों और शास्त्रों में प्रस्तुत किया। सीएम योगी ने कहा कि योग की प्राचीन भारतीय परंपरा को आधुनिक युग में आगे बढ़ने का श्रेय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को है। ऐसे दौर में जब बाहरी लोग योग के आसनों को पेटेंट कराने लगे थे और भारत अपनी विरासत से वंचित हो रहा था, तब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संयुक्त राष्ट्र संघ में पहल कर योग को वैश्विक मान्यता दिलाई। पीएम मोदी के ही प्रयास से 21 जून 2015 से अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाने की शुरूआत हुई। आज भारत ही नहीं, दुनिया के 190 देश योग दिवस से जुड़े हुए हैं। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन भारत की ऋषि परंपरा के प्रति कृतज्ञापित करने और आने वाली पीढ़ी को विरासत से जोड़ने का प्रयास है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि योग से बीमारियों से मुक्ति पाना संभव है। कहा भी गया है, 'न तस्य रोगो न जरा न मृत्युः प्राप्तस्य योगाग्निमयं शरीरम्'। (योगाभ्यास से तपा हुआ शरीर रोग, जरा (बुढापा) एवं मृत्यु से मुक्त हो जाता है)।

सीएम ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर महायोगी गुरु गोरखनाथ की पावन धरा पर योग के कार्यक्रम से जुड़ने के अवसर को अपने लिए सौभाग्य बताते हुए विश्वास व्यक्त किया कि योग का उत्साह स्वस्थ शरीर और मस्तिष्क के माध्यम से लोक कल्याण, समाज कल्याण और राष्ट्र कल्याण का मार्ग प्रशस्त करेगा।

सीएम ने सुना पीएम का संबोधन

11वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गोरखनाथ मंदिर के महंत दिग्विजयनाथ स्मृति सभागार में आयोजित कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का लाइव संबोधन देखा व सुना। इसके बाद उन्होंने सभागार में उपस्थित योग साधकों व प्रशिक्षुओं के साथ योग के विभिन्न आसनों, प्राणायाम, ध्यान का अभ्यास किया। योग मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की नियमित दिनचर्या का अनिवार्य व अपरिहार्य हिस्सा है। गोरखनाथ मंदिर में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ प्रदेश सरकार के जल शक्ति मंत्री स्वतंत्रदेव सिंह, सांसद रविकिशन शुक्ल, महापौर डॉ. मंगलेश श्रीवास्तव, विधायक फतेह बहादुर सिंह, महेंद्रपाल सिंह, विपिन सिंह, प्रदीप शुक्ल सहित कई अधिकारियों, योग साधकों, प्रशिक्षुओं और जनसामान्य ने योगाभ्यास किया। महंत दिग्विजयनाथ स्मृति भवन के सभागार के अतिरिक्त भवन के बाहर और मंदिर परिसर के विभिन्न हिस्सों में भी सामूहिक योगाभ्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

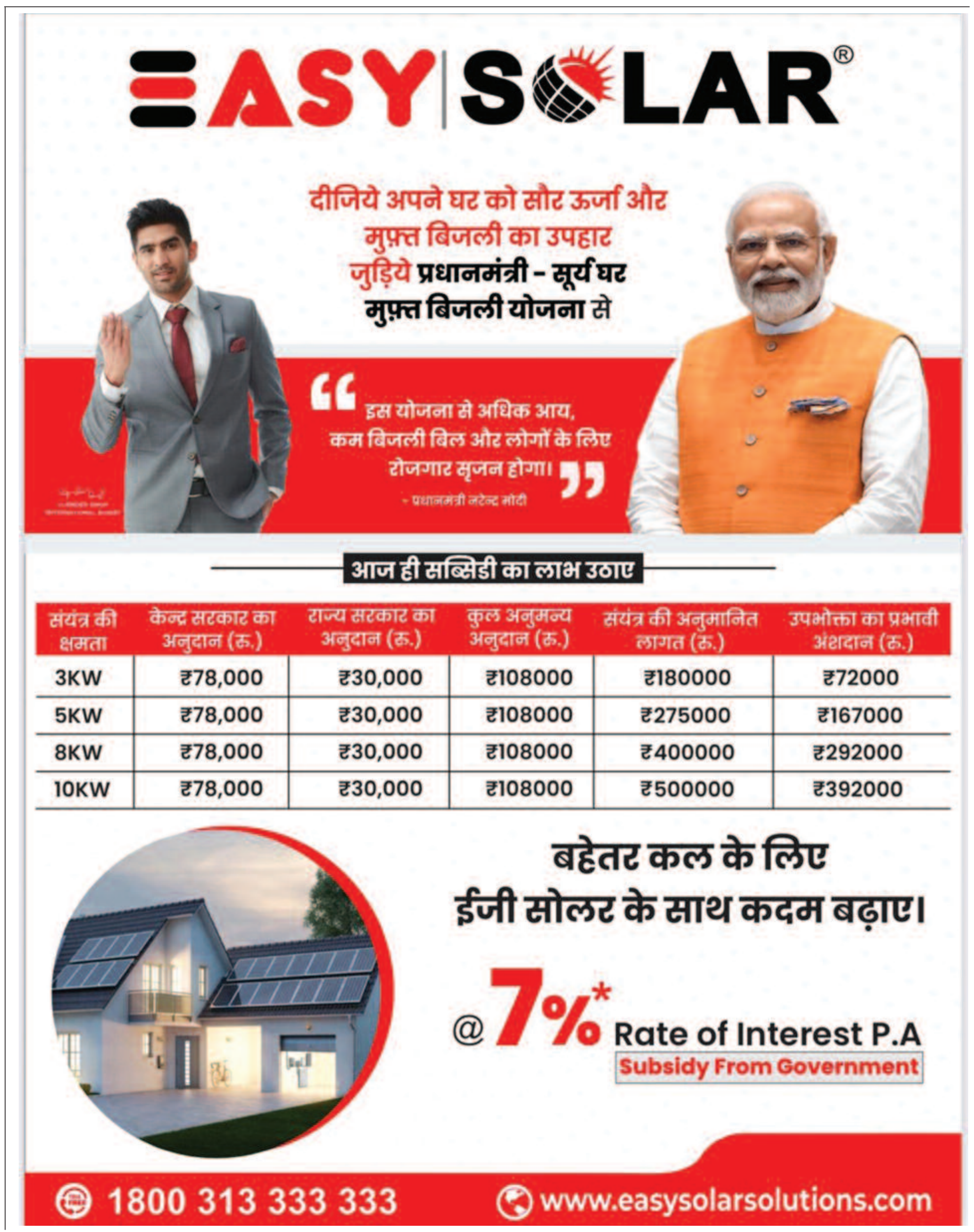

संयंत्र की क्षमता	केन्द्र सरकार का अनुदान (रु.)	राज्य सरकार का अनुदान (रु.)	कुल अनुमन्य अनुदान (रु.)	संयंत्र की अनुमानित लागत (रु.)	उपभोक्ता का प्रभावी अंशदान (रु.)
3KW	₹78,000	₹30,000	₹108000	₹180000	₹72000
5KW	₹78,000	₹30,000	₹108000	₹275000	₹167000
8KW	₹78,000	₹30,000	₹108000	₹400000	₹292000
10KW	₹78,000	₹30,000	₹108000	₹500000	₹392000

बहेतर कल के लिए
ईजी सोलर के साथ कदम बढ़ाए।
@ 7%* Rate of Interest P.A
Subsidy From Government
1800 313 333 333
www.easysolarsolutions.com

भारत ने योग में विश्व को नई राह दिखाई: केशव प्रसाद मौर्य

देश और समाज की सेवा के लिए स्वस्थ रहना बहुत आवश्यक, योग से मन और तन दोनों ही स्वस्थ व मजबूत रहेंगे

- जिला प्रशासन एवं सिविल डिफेंस की ओर से आयोजित 11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के कार्यक्रम में उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य सहित तमाम जनप्रतिनिधियों, प्रशासनिक अधिकारियों ने लिया प्रतिभाग
- कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के योग कार्यक्रम विशाखापट्टनम का सजीव प्रसारण देखा गया

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

गाजियाबाद। आईएमएस डासना में जिला प्रशासन एवं सिविल डिफेंस की ओर से आयोजित 11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस में बतौर मुख्य अतिथि बोलते हुए डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि हमें योग को अपने जीवन की दैनिक दिनचर्या में शामिल किया जाना चाहिए। हमें देश और समाज की सेवा करने के लिए स्वस्थ रहना आवश्यक है। यदि हम जीवन को सुखमय बनाना चाहते हैं, तो इसके लिए हमें स्वयं को स्वस्थ रखना होगा और शरीर को स्वस्थ रखने के लिए योग ही सबसे सरल व सुगम माध्यम है। उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि आज भारत ही नहीं, बल्कि पूरा विश्व अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मना रहा है। उन्होंने इसका श्रेय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को देते हुए कहा कि मोदी के पूरे विश्व को स्वस्थ रखने के विजन के चलते योग ने पूरी दुनिया को नहीं राह दिखाई है। विगत 11 वर्षों से भारत विश्व में योग गुरु बना हुआ है। उप मुख्यमंत्री श्री मौर्य ने कहा आगे कहा कि वर्तमान समय में विश्व में हर तरफ अशांति फैली हुई है और ऐसे में मन को शांत एवं शरीर को स्वस्थ रखने के लिए पूरी दुनिया योग को अपना चुकी है। इसका पूरा श्रेय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को जाता है। उन्होंने आम जन मानस से आह्वान किया कि वह प्रतिदिन कुछ समय योग के लिए जरूर निकालें, ताकि उनका मन और तन दोनों ही स्वस्थ व मजबूत बने रहें। जिलाधिकारी दीपक मीणा ने कहा कि इस कार्यक्रम में उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य उपस्थिति से कार्यक्रम और गरिमा पूर्ण हो गया है। इससे जहां योग करने वालों में नए उत्साह का संचार हुआ, वहीं योग के प्रति जनता अधिक जागरूक हुए हैं। जिलाधिकारी ने कार्यक्रम में प्रतिभाग लेने पर उपमुख्यमंत्री, जनप्रतिनिधियों और गणमान्य लोगों का आभार व्यक्त किया। जिलाधिकारी द्वारा कार्यक्रम में आए जनप्रनिधियों, प्रशासनिक अधिकारियों एवं योग गुरू को प्रतीक चिन्ह भेंट करते हुए सम्मानित किया गया। इससे पूर्व कार्यक्रम में पधारे सभी जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों व जनता ने विशाखापट्टनम में आयोजित प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के योग कार्यक्रम का बड़े स्क्रीन पर सजीव प्रसारण देखा। तत्पश्चात योग गुरु डॉक्टर यश पाराशर ने सभी जनप्रतिनिधियों प्रशासनिक अधिकारियों व कार्यक्रम में पहुंचे आमजनों को योग का अभ्यास करवाया।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से स्थानीय सांसद अतुल गर्ग, सदर विधायक संजीव शर्मा, विधायक अजीत पाल त्यागी, पूर्व सांसद अनिल अग्रवाल, भाजपा प्रदेश मंत्री बसंत त्यागी, भाजपा महानगर अध्यक्ष मयंक गोयल, आईएमएस संस्थान के चेयरमैन राकेश रिछारिया, उत्तर प्रदेश शहरी विकास विभाग के प्रमुख सचिव अमृत अभिजात, जिलाधिकारी दीपक मीणा, नगर आयुक्त विक्रमादित्य सिंह मलिक, अपर जिलाधिकारी प्रशासन रणविजय सिंह, अपर जिलाधिकारी नगर विकास कश्यप, एडीएम एफ/आर सौरभ भट्ट, जिला सूचना अधिकारी योगेंद्र प्रताप सिंह, आयुर्वेदिक एवं युनानी अधिकारी अशोक राणा, सिविल डिफेंस के चीफ वार्डन ललित जायसवाल, अनिल अग्रवाल सहित हजारों गणमान्य लोगों ने प्रतिभाग लिया। कार्यक्रम का संचालन डा.पूनम शर्मा ने किया।

पशुधन एवं दुग्ध विकास ने की गौआश्रय स्थलों की समीक्षा बैठक

योगी सरकार दो सौ गायें पालने पर दो करोड़ की अनुदान राशि देगी: धर्मपाल सिंह

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

गाजियाबाद। पशुधन मंत्री धर्मपाल सिंह ने कहा कि किसान समृद्धि योजना के तहत उत्तर प्रदेश सरकार दो सौ गायें पालने पर दो करोड़ की अनुदान राशि देगी। उन्होंने यहां रविवार को पत्रकारों से बातचीत में कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किसानों की आय दोगुनी करने के लिए किसान समृद्धि योजना के साथ-साथ कई अन्य योजनाएं लागू की हैं।

इनमें सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण गौवंशों को संवर्द्धन व दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए देसी गायों की नस्लों में सुधार लाना है। पशुधन मंत्री ने्रकहा कि कृत्रिम गभार्धान से देशी गायों की नस्लों में सुधार लाया जाएगा।

इसके साथ ही पशुपालको को गायें पालने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से मुफ्त गायें दिये जाने से साथ ही उन्हें पालने के लिए अनुदान राशि भी उपलब्ध करायी जा रही है।

प्रदेश सरकार द्वारा अच्छी नस्ल की एक गाय पालने के लिए चालीस हजार से लेकर दौ सौ गायें पालने पर दो करोड़ की अनुदान राशि तक प्रदान की जा रही है। उन्होने कहा कि योगी सरकार की प्राथमिकता निराश्रित गायों को गौशाला में पर्याप्त हरे चारे, पानी व रहने की उचित व्यवस्था कराना है। निराश्रित गोवंशों के चारे के लिए अब प्रति दिन बीस रुपये के स्थान पर पचास रुपये दिये जा रहे हैं। यदि कोई व्यक्ति चार निराश्रित गौवंश को चारा आदि की व्यवस्था करता है तो उसे प्रति माह छह हजार रुपये सरकार की ओर से प्रदान किये जाएंगे।

पशुधन मंत्री धर्मपाल सिंह ने कहा कि प्रदेश सरकार आवारा पशुओं की संख्या में कमी लाने के लिए जल्द ही बड़े पैमाने पर बछ्डों का बधियाकरण, चारागाह की जमीनें चिन्हित कर उन्हें कब्जा मुक्त कराने, बकरी पालन, सुअर पालन, मुर्गी पालन आदि को बढावा देने के लिए अनुदान राशि दे रही है। उन्होने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ गौरक्षा के प्रति बहुत गंभीर हैं।

आवारा व निराश्रित गौवंश संबंधी जानकारी देने अथवा कोई भी शिकायत जनता 1962 टोल फ्री नं पर कर सकती है। एक सवाल के जवाब में पशुधन मंत्री ने दावा कि उत्तर प्रदेश दूध उत्पादन में देश में नंबर एक राज्य है।

दुधारु गाय-भैंसो सहित अन्य पशुओं को बीमारी से बचाने के लिए टीकाकरण करने, आवारा व निराश्रित गौवंशों व अन्य पशुओं को बचाने के लिए प्रदेश में 520 मोबाइल पशु चिकित्सा दल बनाये गये हैं। बीमार व घायल पशु की चिकित्सा के लिए टोल फ्री नंबर 1962 उपलब्ध है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार अपनी विभिन्न योजनाओं के माध्यम से पशुपालको की आदमी दोगुनी करने के लिए प्रतिबद्ध है।

इससे पहले पशुधन एवं दुग्ध विकास मंत्री धर्मपाल सिंह ने रविवार को जिला मुख्यालय परिसर स्थित विकास भवन में आधा दर्जन विभागों पशुधन विभाग, ग्राम्य विकास, शहरी विकास विभाग, राजस्व, पंचायती राज विभाग एवं पुलिस विभाग के अधिकारियों संग समीक्षा बैठक की। मंत्री धर्मपाल सिंह ने अधिकारियों को गौवंश संबंधी केन्द्र सरकार व उप्र सरकार की योजनाओं का अधिक से अधिक पात्र लोगों को लाभांवित कराने का निर्देश दिया। जनपद के अधिकारियों ने उन्हें अवगत कराया कि जनपद गाजियाबाद में मुख्यमंत्री सहभागिता योजना के तहत लाभार्थियों की संख्या 680 है, जबाकि इन्हें कुल मिलाकर 1165 गोवंश सुपुर्द किये गये हैं।

सिटी फारेस्ट में आने वाले दिनों में देखने को मिलेगा विदेशों जैसा नजारा

पक्षियों की चहचहाट के बीच ध्यान और योग की भी उपलब्ध होगी सुविधा

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

गाजियाबाद। गाजियाबाद विकास प्राधिकरण (जीडीए) के द्वारा एक बडे.एरिया में कभी विकसित किए गए सिटी फारेस्ट को नए लुक में विकसित करने की दिशा में कदम उठाया जाएगा(जहां पर न केवल हर तरफ हरियाली नजर आए, बल्कि विदेशो और पहाडी क्षेत्र की भांति रंग बिरंगी प्राकृतिक रौशनी के बीच नजारे करीब से देखने को मिले बल्कि ऐसी भी व्यवस्था होगी जहां एकदम शांत वातावरण में ध्यान और योग की सुविधा का भी लाभ उठाया जा सकें।

इसके साथ साथ पछियों की चहचहाट भी करीब से सुनने को मिले। प्राधिकरण उपाध्यक्ष अतुल वत्स की अध्यक्षता में हुई बैठक के दौरान एक निजी एजेंसी के द्वारा प्रस्तुतिकरण दिया गया। बैठक के दौरान जोर दिया गया कि मौजूदा वक्त में जिस तरीके से एनसीआर में दम घोंटू वायु प्रदूषण की समस्या पैदा हुई है। उसके बीच में लोगों को एक नया जीवन उपलब्ध हो। ऐसी विशिष्ट विशेषताओं का निर्माण करना है जो कि एक अद्वितीय अनुभव प्रदान करें।

शहरी क्षेत्र में मौजूद हरित आवरण को संरक्षित करना और उसे सुदृढ बनाना है। अधिक इंटरैक्टिव और मनोरंजक स्थानों के लिए प्राकृतिक सुविधाएं उपलब्ध करायी जाए। इस बात पर बल दिया गया कि सिटी फारेस्ट को इस रूप में विकसित किया जाए, ताकि आने वाले वक्त में न केवल गाजियाबाद बल्कि एनसीआर के लोग आकर लुत्फ उठा सकें साथ ही आने वाले समय में नई पीढी भी प्रकृति को करीब से जान सकें।

यू तो मौजूदा समय में भी सिटी फारेस्ट में नौकायन की भी सुविधा उपलब्ध है, इसके साथ साथ हिंडन रिबर के निकट होने के मददेनजर अधिक आकर्षक रूप दिया जाएगा। बच्चों के खेलने के लिए झूले तथा साइकिल आदि ट्रेक का भी लुत्फ उठा सकें। इसके साथ साथ सिटी फारेस्ट के एक हिस्से में ओपन थिएटर का भी निर्माण किया जाएगा, ताकि आने वाले वक्त में इसमें समय समय पर शो के बीच कार्यक्रमों का आयोजन किया जा सकें। ओपन थिएटर का उददेश्य सामुदयिक कार्यक्रमों और आयोजनो के लिए मंच प्रदान करना है। जोर दिया गया कि कार्यात्मक, सौंदर्य और प्रकृति से गहरे जुडाव को जोडते हुए क्षेत्र की जैव विविधता को सुदृढ करें। इन तमाम कदमों के बीच प्रयास ये होगा कि दूर तक भी जीव जन्तुओं को किसी तरह का नुकसान न हो। ये तमाम कदम हाल में बाढ से प्रभावित हुए सिटी फारेस्ट में हर तरफ हरियाली को बढावा दिया जाएगा, और पौधारोपण किया जायेगा, लैंडस्केप वर्ल्ड क्लास का विकसित किया जायेगा जो कि सतत विकास को ध्यान मे रखते हुए किया जायेगा।

एमएलसी दिनेश कुमार गोयल ने योग दिवस पर वाल्मीकि पार्क में किया योग

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

गाजियाबाद। एमएलसी दिनेश कुमार गोयल द्वारा 11 वें अन्तराष्ट्रीय योग दिवस के मौके पर गाजियाबाद शहर मंडल के अन्तर्गत वाल्मीकि पार्क नवयुग मार्किट में सहभागिता करते हुये योग कर सभी देशवासियों को शुभकामनाएं दी। दिनेश कुमार गोयल द्वारा कहा कि हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आहवाहन पर भारत ही नही पूरे दुनिया में योग दिवस मनाया जा रहा है। इसका उददेश्य योग के बारे मे लोगो में जागरूकता फैलाना है जिससे शरीर स्वस्थ रहें। योग हमें स्वस्थ एवं दीघार्यु बनाता है। इस अवसर पर महिम गुप्ता एडवोकेट मडंल अध्यक्ष, राजू पांचाल, प्रदीप चौहान, संदीप त्यागी आदि गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहें।

योग को बनाए दैनिक दिनचर्या का हिस्सा, सकारात्मक बदलाव के लिए आज से ही शुरूआत करें: अतुल वत्स

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

गाजियाबाद। विश्व योग दिवस के मौके पर गाजियाबाद विकास प्राधिकरण द्वारा भी आयोजन रखा गया। प्राधिकरण के द्वारा विकसित मधुबन बापू धाम योजना के गोल चक्कर पार्क के अलावा प्राधिकरण कार्यालय परिसर में आयोजन रखा गया।

प्राधिकरण कार्यालय परिसर में आयोजित कार्यक्रम के दौरान जीडीए उपाध्यक्ष श्री अतुल वत्स ने कहा कि इंसान मौजूदा में इतनी अधिक भाग दौड वाली जिंदगी में व्यस्त हो गया है कि वह खुद के शरीर के प्रति भी अनभिज्ञ हो गया है। समय समय पर चिकित्सा क्षेत्र में अध्ययन के बाद जारी रिपोर्ट पर ही गौर करें तो इंसान के शरीर में बीमारियों के प्रवेश का मुख्य कारण केवल इंसान के द्वारा खुद के शरीर पर ध्यान नहीं दिया जाना है। मौजूदा समय मे सबसे बडी आवश्यकता योग को नित्य की दिनचर्या का हिस्सा बनाना है। इसके लिए विश्व योग दिवस आदि के आयोजन का इंतजार नहीं किया जाना चाहिए। योग अनुशासित जीवन शैली अपनाने का माध्यम है इससे न केवल मानसिक शांति प्राप्त होती है बल्कि स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। इस दौरान प्राधिकरण उपाध्यक्ष ने जीडीए स्टाफ को भी नित्य की जीवन शैली का हिस्सा बनाने पर बल दिया। आयोजन के दौरान योगाचार्यों के द्वारा योग अभ्यास संचालित किए गए। इस दौरान जीडीए सचिव, वित्त नियंत्रक एवं प्राधिकरण के दूसरे अधिकारियों व कर्मचारियों के द्वारा भी बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया गया।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर जिला प्रशासन एवं गाजियाबाद नगर निगम के तत्वाधान में आयोजित हुआ भव्य कार्यक्रम

योग दिवस पर सिविल डिफेंस गाजियाबाद का रहा विशेष सहयोग: डीएम

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

गाजियाबाद। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2025 पर गाजियाबाद में अनेकों कार्यक्रम आयोजित हुए जिसमें शहर निवासियों ने उत्साह पूर्वक प्रतिभाग किया। गाजियाबाद नगर निगम के अधिकांश पार्कों में योग का भरपूर लाभ निवासियों द्वारा लिया गया। इसी क्रम में जिला प्रशासन गाजियाबाद तथा नगर निगम के तत्वाधान में भव्य कार्यक्रम का भी आयोजन आईएमएस यूनिवर्सिटी कोर्सेज केंपस डासना में हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य उपस्थित रहे, जिनके द्वारा। कार्यक्रम के अंत में शहर वासियों को योग अपनाएं पौधा भी लगाएं का संदेश दिया गया। प्रमुख सचिव नगर विकास अमृत अभिजात द्वारा भी कार्यक्रम में उपस्थित होकर योग किया गया। जिलाधिकारी दीपक मीणा द्वारा बताया गया की अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर शहर मे निवासियों द्वारा उत्साह पूर्वक योग दिवस मनाया गया। इसी क्रम में आईएमएस यूनिवर्सिटी कोर्सेज केंपस डसना में भी भव्य योग दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें उपमुख्यमंत्री सहित समस्त विधायकों ने भी प्रतिभाग किया। सांसद अतुल गर्ग भी उपस्थित हुए जिनके द्वारा 1500 शहर निवासियों के साथ एक ही समय पर योग किया गया, कार्यक्रम के आयोजन में सिविल डिफेंस के चीफ वार्डन ललित जायसवाल तथा गाजियाबाद नगर निगम का विशेष सहयोग रहा। जिला प्रशासन तथा गाजियाबाद नगर निगम के तत्वाधान में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम में सभी जनप्रतिनिधियों तथा अधिकारियों ने एक ही मंच पर योगाभ्यास किया तथा शहर वासियों से योग अपने के लिए अपील की गई। गाजियाबाद नगर आयुक्त विक्रमादित्य सिंह मलिक के द्वारा बताया गया कि शहर के अधिकांश पार्कों में योग के कार्यक्रम आयोजित हुए हैं जिसमें माननीय पार्षदों सहित निगम अधिकारियों ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया है तथा नियमित योग करने वालों को मोटिवेट भी किया गया है। गाजियाबाद नगर निगम की सफाई मित्रों तथा मालियों ने भी योग दिवस के अवसर पर योग किया तथा शहर वासियों को भी योग करने हेतु जागरूक किया गया। कार्यक्रम में अतुल वत्स गाजियाबाद विकास प्राधिकरण के वीसी अतुल वत्स भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में सिविल डिफेंस से अनिल अग्रवाल तथा राकेश छारिया मैनेजिंग ट्रस्टी आईएमएस द्वारा सभी उपस्थित जनप्रतिनिधियों अधिकारियों शहर निवासियों का धन्यवाद किया गया।

योग और आयुर्वेद: समग्र स्वास्थ्य संजीवनी

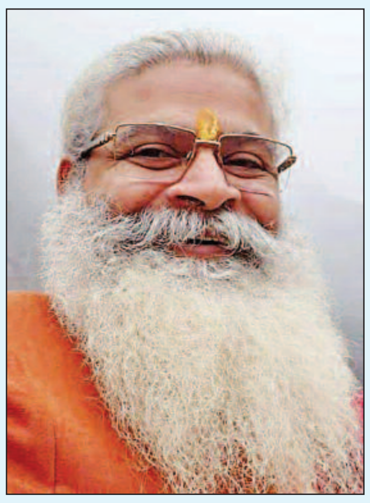

आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री
ज्योतिर्विद्य

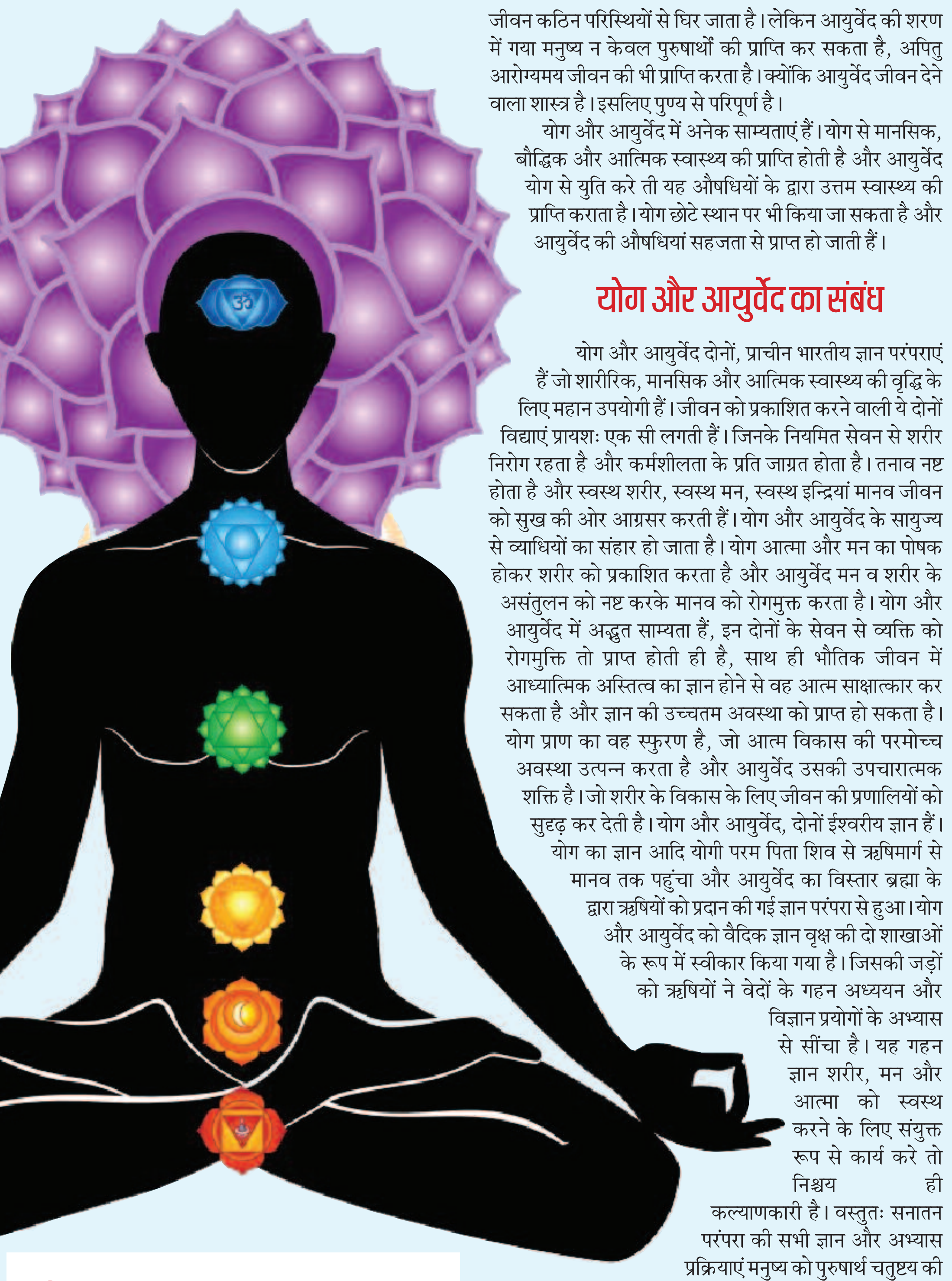

सनातन संस्कृति विश्व कल्याण की संस्कृति है। जिसका उद्देश्य मनुष्य ही नहीं, अपितु प्राणीमात्र का हित है। ऋषियों ने स्वास्थ्य को प्रार्थमिकता की विषयवस्तु स्वीकरते हुए सबके सुख की कामना की है। मानव सभ्यता के आरम्भ से ही यहां सर्वजन हिताय की परंपरा रही है। इसी कारण सनातन के सभी शास्त्र सबके निरामय की बात कहते हैं। हमारी नित्य प्रार्थनाओं में कहा जाता है कि

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिदुःखभाग्भवेत् ॥

क्योंकि सबसे पहला सुख निरोगी काया ही कहा गया है। इसीलिए अथर्ववेद से ऋग्वेद तक स्वास्थ्य के सूत्रमंत्र और ऋचाएं मिलती हैं। आयुर्वेद को अथर्ववेद का उपवेद कहा जाता है। अथर्ववेद ही मूल वेद है और वेदत्रयी (ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद) इसी के भाग हैं।

जैसे नदी के दो किनारे जल के प्रवाह को नियंत्रित करते हैं और प्रवाह को गति प्रदान करते हैं, वैसे ही योग और आयुर्वेद रूपी किनारे जीव के शारीरिक, मानसिक और आत्मिक स्वास्थ्य को नियंत्रित करते हैं। जिसके प्रभाव से मनुष्य स्वयं, परिवार और समाज के स्वस्थ प्रवाह को गति मिलती है और राष्ट्र प्रगति करता है। योग और आयुर्वेद का उद्देश्य मनुष्य को समग्र रूप से स्वस्थ रखना है। समग्र स्वास्थ्य का अर्थ है शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य को संतुलित करना। जिससे मानव सम्पूर्ण मानव होने की ओर अग्रसर हो। शरीर की गतिविधियां स्वस्थ हों, उचित पोषण हो, समयानुकूल निद्रा हो और रोग प्रतिरोधक क्षमता का विकास हो, मनोदशा पर नियन्त्रण हो, तनाव प्रबन्धित हो और संचेतना की वृद्धि हो। देखा गया है कि समग्र रूप से स्वस्थ व्यक्ति का व्यक्तित्य समाज के प्रति संतुष्ट और लोक कल्याणकारी होता है।

योग

योग शब्द की उत्पत्ति युज् धातु से हुई है। महर्षि पाणिनि ने व्याकरण की दृष्टि से इसे तीन प्रकार से प्रयोग किया है।

प्रथम युज् समाद्यौ (दिवादिगण) जिसका अर्थ है समाधि के लिए सिद्धि से जुड़ना। साधनाओं को जीवन में उतारना। द्वितीय युज् योगे (रुधादिगण) जिसका सामान्य अर्थ है मिलना, जुड़ना, जोडना। दुःख रूपी संसार से वियोग और ईश्वर से संयोग।

इसी को भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में स्पष्ट करते हुए कहा था-

तं विद्याद्दुःख संयोग वियोग योग संज्ञितम् ॥

तृतीय युज् संयमने (चुरादिगण) जिसका तात्पर्य है मन का नियमन, संयम अथवा मन पर नियंत्रण प्राप्त करके आत्मा का परमात्मा से मिलन करना।

महर्षि याज्ञवल्क्य ने कहा है कि

अयं तु परमो धर्मो यत्योगेनात्मदर्शनम् ॥

अर्थात जिस साधना द्वारा आत्मदर्शन और ब्रह्मसाक्षात्कार होता है, वह योगशास्त्र है। योग साधना से न केवल शारीरिक शक्तियों का विकास होता है, अपितु निरोगता पूर्वक जीवन जीने की कला प्रास होती है। श्वेताश्वरोपनिषद कहता है कि

न तस्य रोगो न जरा न मृत्युः ।
प्राप्तस्य योगाग्निमयं शरीरम् ॥

अर्थात् जिस मनुष्य ने योगरूपी अग्नि से अपने शरीर को तपा लिया, वह रोग, वृद्धावस्था और अकाल मृत्यु पर विजय प्राप्त कर लेता है।

वर्तमान में तनाव भरे जीवन में योग के प्रयोग मानसिक रोगों का महत्वपूर्ण निदान है। योग द्वारा चित्तवृत्तियों पर नियंत्रण करने की कला का विकास होता है, जिससे मन स्वस्थ रहता है। मन के स्वस्थ होने से शरीर की ऊर्जाएं सुव्यवस्थित होती है और ईर्ष्या, घृणा, असंतुष्टि, क्रोध, सशंकित रहने की प्रवृत्ति, कटुता, द्वेषभाव के कारण शरीर दुर्विचारों से दूषित नहीं होता है। रक्त विषयुक्त नहीं होता है, जिस कारण ओजस्विता निरंतर बढ़ती है और तनाव रहित होने से मानसिक एकाग्रता की वृद्धि होती है। क्योंकि मन ही मनुष्य के बंधन और मोक्ष का कारक होता है। अतः योग के आध्यात्मिक प्रभावों से तत्वज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। ऐसा होने पर परिवार में शान्ति और समृद्धि की वृद्धि होती है। नकारात्मक चिंतन नष्ट होने लगता है, जो व्यक्ति को समाज में सुसभ्य मानवों की श्रेणी में ला खड़ा करता है और मनुष्य को नैतिकता से जोड़ता हुआ उसके आचरण से असभ्यता के लक्षण नष्ट कर देता है।

आयुर्वेद

आयुर्वेद शब्द की निरुक्ति है आयुषो वेदः अर्थात यह आयु का वेद है। चैतन्य की स्थिति को आयु कहा गया है। अमरकोष में इसे जीवित काल कहा गया है। चरक संहिता में इसे शरीर, इन्द्रिय, मन और आत्मा का संयोग कहा गया है। वस्तुतः आयुर्वेद, आयुः वेद, इन दो शब्दों के संयोग से बना है। आयुर्वेद में वेद शब्द विद् ज्ञाने धातु से बना है। जिसका अर्थ है ज्ञान, सत्ता, विचार और प्राप्ति। जिससे अस्तित्व का बोथ हो सके, वह ज्ञान वेद कहलाता है। अतः जिस शास्त्र में आयु का जान हो, अस्तित्व हो, आयु की प्राप्ति हो, रोगरहित जीवन की अवस्था प्राप्त हो, वह आयुर्वेद कहाता है। महर्षि चरक के अनुसार

तत्र आयुर्वेदः शाखा विद्या सूत्रं ज्ञानं शास्त्रं लक्षणं
तन्त्रमित्यनर्थान्तरम् ॥

अर्थात शाखा, विद्या, सूत्र, ज्ञान, शास्त्र, लक्षण, और तन्त्र आयुर्वेद के पर्याय है। जी शास्त्र हितायु, अहितायु, सुखायु और दुःखायु का ज्ञान प्रदान करे, सभी आयु संबन्धी और स्वास्थ्यवर्धक उपचारों और प्रयोगों का ज्ञान देने वाला, शरीर रचना और पथ्य अपथ्य की जानकारी देने वाला, साध्य और असाध्य रोगों की भी चिकित्सा करने वाला शास्त्र है, वह आयुर्वेद है। महर्षि वाग्भट कहते हैं कि-

आयुकामयमानेन धर्मार्थसुखसाधनम् ।
आयुर्वेदोपदेशेषु विधेयः परमादरः ॥

अर्थात् आयुर्वेद शास्त्र का ज्ञान पुरुषार्थ चतुष्ट्य की प्राप्ति के मार्ग को प्रशस्त करता है। जीवन को आरोग्यमय कर देता है। क्योंकि रोगी व्यक्ति न तो धार्मिक क्रियाएं कर सकता है, न धनार्जन कर सकता है, न आजीविका व्यवस्थित कर सकता है, न सुख सुविधाओं का आनन्द ले सकता है, न मोक्ष की प्रासि कर सकता है और उसका जीवन कठिन परिस्थियों से घिर जाता है। लेकिन आयुर्वेद की शरण में गया मनुष्य न केवल पुरुषार्थों की प्राप्ति कर सकता है, अपितु आरोग्यमय जीवन की भी प्राप्ति करता है। क्योंकि आयुर्वेद जीवन देने वाला शास्त्र है। इसलिए पुण्य से परिपूर्ण है।

योग और आयुर्वेद में अनेक साम्यताएं हैं। योग से मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है और आयुर्वेद योग से युति करे ती यह औषधियों के द्वारा उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति कराता है। योग छोटे स्थान पर भी किया जा सकता है और आयुर्वेद की औषधियां सहजता से प्राप्त हो जाती हैं।

योग और आयुर्वेद का संबंध

योग और आयुर्वेद दोनों, प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपराएं हैं जो शारीरिक, मानसिक और आत्मिक स्वास्थ्य की वृद्धि के लिए महान उपयोगी हैं। जीवन को प्रकाशित करने वाली ये दोनों विद्याएं प्रायशः एक सी लगती हैं। जिनके नियमित सेवन से शरीर निरोग रहता है और कर्मशीलता के प्रति जाग्रत होता है। तनाव नष्ट होता है और स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मन, स्वस्थ इन्द्रियां मानव जीवन को सुख की ओर आग्रसर करती हैं। योग और आयुर्वेद के सायुज्य से व्याधियों का संहार हो जाता है। योग आत्मा और मन का पोषक होकर शरीर को प्रकाशित करता है और आयुर्वेद मन व शरीर के असंतुलन को नष्ट करके मानव को रोगमुक्त करता है। योग और आयुर्वेद में अद्भुत साम्यता हैं, इन दोनों के सेवन से व्यक्ति को रोगमुक्ति तो प्राप्त होती ही है, साथ ही भौतिक जीवन में आध्यात्मिक अस्तित्व का ज्ञान होने से वह आत्म साक्षात्कार कर सकता है और ज्ञान की उच्चतम अवस्था को प्राप्त हो सकता है। योग प्राण का वह स्फुरण है, जो आत्म विकास की परमोच्च अवस्था उत्पन्न करता है और आयुर्वेद उसकी उपचारात्मक शक्ति है। जो शरीर के विकास के लिए जीवन की प्रणालियों को सुद्दढ़ कर देती है। योग और आयुर्वेद, दोनों ईश्वरीय ज्ञान हैं। योग का ज्ञान आदि योगी परम पिता शिव से ऋषिमार्ग से मानव तक पहुंचा और आयुर्वेद का विस्तार ब्रह्मा के द्वारा ऋषियों को प्रदान की गई ज्ञान परंपरा से हुआ। योग और आयुर्वेद को वैदिक ज्ञान वृक्ष की दो शाखाओं के रूप में स्वीकार किया गया है। जिसकी जड़ों को ऋषियों ने वेदों के गहन अध्ययन और विज्ञान प्रयोगों के अभ्यास से सींचा है। यह गहन ज्ञान शरीर, मन और आत्मा को स्वस्थ करने के लिए संयुक्त रूप से कार्य करे तो निश्चय ही कल्याणकारी है। वस्तुतः सनातन परंपरा की सभी ज्ञान और अभ्यास प्रक्रियाएं मनुष्य को पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति के लिए प्रेरित करती हैं और उसके कल्याण के लिए सतत निरंतर कार्य करती हैं। योग और आयुर्वेद भी ईश्वर की वही कल्याणकारी वैदिक व्यवस्था है, जिसे ऋषियों ने हम तक पहुंचाया है। इस प्रकार योग और आयुर्वेद श्वास प्रश्वास से आहार और प्रकृति सान्निध्य से औषधि प्रयोग तक मनुष्य को समग्र रूप से स्वस्थ रखने का कार्य करते हैं। इन दोनों के सायुज्य से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति होती है। शरीर के सब चक्र अपने उत्कर्ष को प्राप्त होते हैं। शरीर की सब नाडियां शुद्ध हो जाती हैं। पंच कोष शोध, कुंडलिनी शक्ति सहित समग्र कल्याण का मार्ग खुल जाता है। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में आत्मा के उद्धार का उपदेश करते हुए कहा है कि

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् ।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मना ॥

अर्थात् मनुष्य को स्वयं अपना उद्धार करना चाहिए और पतन के मार्गसे दूर हो जाना चाहिए। क्योंकि वह स्वयं ही अपना मित्र है और स्वयं ही शत्रु है। गीता के इस उपदेश का पालन करने के लिए सर्वप्रथम शरीर को स्वस्थ रखना आवश्यक है और स्वस्थ शरीर में आत्मा और मन भी स्वस्थ रहें, उसके लिए ज्ञान और कर्म का आश्रय लेना चाहिए। क्योंकि शरीर ही धर्म का प्रथम साधन है।

योग और आयुर्वेद के प्रयोगों के नामों में भी साम्यता स्पष्ट करती है कि दोनों का लक्ष्य एक ही है।

योग के आठ अंग कहे गए हैं, जिन्हें अष्टांग योग कहा जाता है। आयुर्वेद के भी आठ अंग कहे गए हैं, जिन्हें अष्टंग आयुर्वेद कहा जाता है।

योग में त्रिगुण सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण के संतुलन के लिए कार्य किया जाता है तो आयुर्वेद में त्रिदोष वात, पित्त कफ के संतुलन के लिए कार्य किया जाता है।

योग में षट्कर्मों का उल्लेख है

धौतिर्वस्तिस्तथा नेतिः लौकिकी त्राटकं तथा।
कपालभातिश्चैतानि षट्कर्माणि समाचरेत् ॥

आयुर्वेद में पंचकर्म को प्रश्रय दिया गया है।

वमनं रेचनं नस्यं निरुहस्वानुवासनम्।
एतानि पञ्चकर्माणि कथितानि मुनीश्वरः ॥

योग में आसनों को स्थान दिया गया है तो आयुर्वेद में व्यायाम को प्रश्रय दिया गया है। आसन और व्यायाम परस्पर आश्रित हैं।

योग में प्राणायाम को प्राण शोधक कहा गया है, जबकि आयुर्वेद में पञ्च प्राण की अवधारणा है।

योग और आयुर्वेद दोनों ही ध्यान, धारणा और समाधि पर साम्यता रखते हैं और दोनों ही पंचमहाभूत के सिद्धान्त पर कार्य करते हैं।

वस्तुतः योग और आयुर्वेद की चिकित्सा अवधारणाएं शास्त्रों के वचन यत्पिण्डे तत्ब्रह्माण्डे के सूक्ष्म विवेचन पर आर्धारित हैं। समस्त ब्रह्माण्ड में जो ग्रह नक्षत्रों की ऊर्जा जगत को प्रकाशित कर रही है, वहीं देह को भी प्रकाशित कर रही है। देह भी एक पिण्ड होने के कारण ब्रह्माण्डीय ऊर्जाओं से परिपूर्ण है। देह और ब्रह्माण्ड सूर्य से संचालित हैं। वह बाह्य जगत में सर्वोत्पादक है और देह में प्राण स्वरूप आत्मा का कारक। वेदों ने सूर्य को जगत की आत्मा कहा गया है। वेदों ने तीन प्रकार के रोग कहे हैं दैहिक, दैविक और भौतिक। जिनके उपचारों की प्रशस्ति भी तीन प्रकार की है। सत्वावजय, युक्तिव्यापाश्रय और दैवव्यापाश्रय। क्योंकि योग और आयुर्वेद दोनों का जन्म वेदों से हुआ है, इसलिए इन दोनों के सायुज्य से लोक कल्याण की साधना संभव है।

योग के षट्कर्म

1. **नेतिः** नेति नासिका के माध्यम से शरीर को शुद्ध करने की क्रिया है।
2. **धौतिः** धौति उदर को शुद्ध करने की क्रिया है।
3. **नौलिः** नौलि पेट की मांसपेशियों को शक्तिशाली बनाने और उदरशुद्धि की क्रिया है।
4. **वस्तिः** वस्ति आंत्रशोधन की महत्वपूर्ण क्रिया है।
5. **कपालभातिः** कपालभाति फुफ्फुस शुद्धि और प्राणशुद्धि की क्रिया है। यह शरीर को प्रकाशित करती है, रोगों को भस्म करती है और ललाट को कांतिमय करती है।
6. **त्राटकः** त्राटक एकाग्रता और ध्यान की क्रिया है, जिसमें एक बिंदु पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

आयुर्वेद के पंचकर्म

1. **वमनः** वमन उदर को शुद्ध करने की क्रिया है, जिसमें पेट से विषाक्त पदार्थों को निकालने के लिए वमन कराया जाता है।
2. **विरेचनः** विरेचन आंतों को शुद्ध करने की क्रिया है, जिसमें आंतों से विषाक्त पदार्थों को निकालने के लिए विरेचक औषधियों का प्रयोग किया जाता है।
3. **वस्तिः** वस्ति आंतों की शुद्ध करने की क्रिया है, जिसमें आंतों में औषधीय पदार्थों आंत्रशोधन किया जाता है।
4. **नस्यः** नासिका मार्ग से शरीर को शुद्ध करने की क्रिया है, जिसमें नाक में औषधीय पदार्थों को डाला जाता है।
5. **रक्तमोक्षणः** रक्तमोक्षण रक्त को शुद्ध करने की क्रिया है, जिसमें शरीर से विषाक्त रक्त को निकालने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रयोग किए जाते हैं।

अष्टांग समन्वय

पातंजल योग दर्शन में योग के आठ अंग कहे गए हैं, जिन्हें अष्टांग योग भी कहा जाता है। इस अष्टांग योग के अनुष्ठान से चित्त की शुद्धि होती है। विवेक जाग्रत होता है। ज्ञान का प्रकाश अन्तस को प्रकाशित करता है। यह जीवन को अनुशासित करता है। यह बहिरंग योग और अन्तरंग योग, दोनों को समाहित करता है। इसमें यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार बहिरंग योग हैं और धारणा, ध्यान व समाथि अंतरंग योग कहाते हैं। योग के इन आठ अंगों का अभ्यास मनुष्य को आन्तरिक और बाह्य रूप से न केवल शुद्ध और स्वस्थ करता है, अपितु उसकी मेधा इतनी प्रखर हो जाती है कि वह संसार को चमत्कृत कर सकता है। इनके अभ्यास से मनुष्य जगत को प्रकाशित करने की क्षमता से परिपूर्ण हो जाता है और शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास प्राप्त कर सकता है। आष्टांग योग के आठ अंग हैं।

अष्टांग योग

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि।

1. यम– अष्टांग योग का पहला अंग यम है। **यम्यते नियम्यते चित्त इति यमः।** यह अवांछनीय कार्यों से मुक्ति दिलाता है, इसलिए यम कहलाता है। कायिक, मानसिक और वाचिक संयम का अभ्यास यम के द्वारा संभव है। यम पांच हैं अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, और अपरिग्रह। अहिंसा के प्रभाव से मन, कर्म और वचन से मनुष्य द्वेष और शत्रुता से मुक्त हो जाता है। वह न स्वयं हिंसा का विचार करता है, न किसी को हिंसा के लिए प्रेरित करता है, न किसी को हिंसा के लिए अनुमोदित करता है। सत्य का आचरण करता है, मन और वाणी एकरस हो जाते हैं। अस्तेय से मन कर्म वचन से परद्रव्य के प्रति लालसा की प्रवृत्ति नष्ट हो जाती है। ब्रहचर्य की प्रतिष्ठा होने पर तेजस्वी और अपरिमित शक्ति को प्राप्त हो जाता है और अपरिग्रह द्वारा वह भोग साधन से मुक्त हो जाता है। इस प्रकार यम का पालन करने वाला साधक सहज भाव को प्राप्त होता है तो रोग स्वयं ही दूर हो जाते हैं और मानव आनन्द को प्राप्त हो जाता है।

2. नियम– नियम भी पांच ही हैं। शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान नियम कहे गए हैं। शौच अर्थात शुद्धि, पवित्रता। जिसमें बाह्य और आंतरिक शुद्धि करने का नियम है। शारीरिक शुद्धि और वाचिक शुद्धि बाह्य शुद्धि है और मानसिक शुद्धि आन्तरिक शुद्धि है। शुद्ध मन और शुद्ध तन में कोई रोग नहीं पनप सकेगा। संतोष प्राप्त होने पर मनुष्य जीवन के उतार चढ़ावों से प्रभावित नहीं होता है और वह सुख दुःख में समान व्यवहार में रहता है। अन्तःकरण की सन्तुष्टि सन्तोष का लक्षण है। शुचिता और सन्तोष को तप के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है। उचित अभ्यास से शरीर, प्राण, इन्द्रियों और मन को नियन्त्रित करना तप है। जिसका सम्बन्ध स्वाध्याय से है। स्वाध्याय से मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होता है। इन सबके साथ ईश्वर का शरणागत होना सभी कष्टों का निवारण कर देता है।

3. आसन– आसन योग का तीसरा अंग है और इसमें विभिन्न शारीरिक मुद्राएं सम्मिलित हैं। जो शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की वृद्धि करता है। आसन की सिद्धि से सभी प्रकार के द्वंद अर्थात शीत, गर्मी, भूख प्यास, हर्ष और विषाद का आघात नहीं होता है। यह समग्र स्वास्थ्य का लक्षण है।

4. प्राणायाम– प्राणायाम योग का चौथा अंग है और इसमें विभित्र श्वास-प्रश्वास की तकनीकी का विशेष प्रयोग होता है, जो प्राण (जीवन ऊर्जा) को नियंत्रित करने में सहायक होता है। प्राणायाम का का कार्य वायवीय शक्ति पर नियंत्रण पाना है। यह समस्त ब्रह्माण्ड वायु से परिपूर्ण है। प्राण का विस्तार तभी सम्भव है, जब श्वास प्रश्वास की गति पर नियंत्रण हो जाए। प्राणायाम की सिद्धि से धारणा की योग्यता उत्पन्न होती है।

5. प्रत्याहार– प्रत्याहार योग का पंचम अंग है, इसमें इंद्रियों को नियंत्रित करने और उन्हें बाहरी वस्तुओं से हटाकर आंतरिक जागरूकता पर केंद्रित करने की प्रक्रिया सम्मिलित है। विषयमुक्त इंद्रियां चित्त की चंचलता, चपलता को नष्ट कर देती हैं।

6. धारणा– मन को एक बिंदु पर केंद्रित करने की प्रक्रिया धारणा कहाती है। यह चित्त की स्थिरता का प्रतीक है और इसकी सिद्धि से ध्यान का मार्ग प्रशस्त होता है।

7. ध्यान– ध्येय का निरन्तर मनन ही ध्यान है। गहन एकाग्रता और मन की स्थिरता की अवस्था ही ध्यान का लक्षण है, जहां व्यक्ति अपने वास्तविक स्वरूप का अनुभव कर सकता है। ध्यान सिद्धि से अहंभाव नष्ट हो जाता है। जो पूर्ण निरोगता का प्रभाव उत्पन्न करता है।

8. समाधि– योग के समस्त सूत्र अन्त में समाधि पर ही प्रगट होते हैं। यह साधना की चरम अवस्था है। इसमें द्वैतभाव भी नष्ट हो जाता है। यही जीवन का परम उत्कर्ष होता है। मनुष्य पूर्ण आत्मजागृति से आत्म साक्षात्कार को प्राप्त होता है।

इस प्रकार योग के आठ अंग मनुष्य को पूर्ण स्वस्थ और जीवन के उत्कर्ष को प्राप्त कराने में सहायक सिद्ध होते हैं।

अष्टांग आयुर्वेद

योग की भांति आयुर्वेद के भी आठ मुख्य अंग हैं, जो आयुर्वेदिक चिकित्सा और स्वास्थ्य को समझने में सहायता करते हैं। ये आठ अंग हैं...

1. काय चिकित्साः चीयते प्रशस्तदोषधातुमलैः इति कायः। काय चिकित्सा अग्नि के संतुलन की चिकित्सा है। आयुर्वेद में अग्नि महत्वपूर्ण महाभूत है। जिसके उपयोग से शरीर की प्रत्येक कोशिका को शुद्ध करने की प्रकिया काय चिकित्सा है। शरीर में अग्नि संतुलन से त्रिदोष और सप्तधातु संतुलित होती हैं। इस विधि में ज्वर, रक्तपित्त, शोथ, उन्माद, अपस्मार, कुष्ठ, प्रमेह और अतिसार आदि रोगों की औषधिप्रयोग द्वारा चिकित्सा की जाती है। आमाशय तथा पक्वाशय से उत्पन्न होने वाले रोगों की शान्ति का उपाय किया जाता है। अतः कायचिकित्सा कहा जाता है।

2. भूतविद्या– मानसिक रोगों की चिकित्सा में भूत विद्या की भूमिका महत्वपूर्ण है। आयुर्वेद में बैक्टीरिया और जीवाणुओं को राक्षस, पिशाच, असुर आदि नामों से पुकारा जाता है। हमारे शरीर में होने वाले अनेक रोग इन्हीं बैक्टीरिया और जीवाणुओं के कारणहोते हैं।

3. शल्य चिकित्सा– किसी शस्त्राघात या चोट लगने या गंभीर घाव होने पर शल्य चिकित्सा की आश्यकता होती है। शल्य चिकित्सा आयुर्वेद का महत्वपूण अंग है जो शस्त्र आदि के द्वारा किया जाता है।

4. शालाक्य तंत्र– गले और गले के ऊपर स्थित सभी अंगों जैसे कि मुंह, नाक, कान, आंख आदि से जुड़ी समस्याओं का निदान शालाक्य तंत्र के अंतर्गत किया जाता है। इसमें शलाका द्वारा चिकित्सा की जाती है।

5. अगद तंत्र– विषों की परीक्षा और उसके दुष्प्रभावों की चिकित्सा अगद तंत्र के अंतर्गत आता है। आयुर्वेद के अनुसार विषाक्त पौधों और विषाक्त खनिज, जीव जंतुओं सांप-बिच्छू आदि के विष की चिकित्सा इस पद्धति से होती है।

6. रसायन तंत्र– रस और धातुओं शोधन के बिना शरीर स्वस्थ नहीं रह सकता है इसलिए रसों और धातुओं का असंतुलन शरीर में जो रोग उत्पयन करते हैं। इनकी चिकित्सा रसायन तंत्र के अंतर्गत की जाती है।

7. वाजीकरण तंत्र– शरीर के प्रजजन तंत्र के रोगों की चिकित्सा वाजीकरण चिकित्सा कहाती है। जिसके अन्तर्गत नपुंसकता आदि की चिकित्सा की जाती है, जो प्रजनन स्वास्थ्य और कामशक्ति को बढ़ाने से संबंधित है।

8. कौमारभृत्य– कौमारभृत्य बाल चिकित्सा को कहा जाता है। जो बच्चों के रोगों की चिकित्सा से संबन्धित है।

यू.पी.ऑब्ज़र्वर

सम्पादकीय

बम, बदला और बेबस इंसान

युद्ध के उन्माद में संवेदना खत्म हो रही है। इजराइल व ईरान एक-दूसरे के ठिकानों पर हमला करने में अमानवीयता की सारी हदें लांघ रहे हैं। ईरान ने समूची नैतिकता को ताक पर रखते हुए इजराइल के मुख्य अस्पताल को निशाना बनाया है। ज्यादा दिन नहीं हुए जब इजराइल ने युद्ध के सभी नियमों को ताक पर रख कर दक्षिणी गाजा के सबसे बड़े अस्पताल पर हमला कर कई लोगों को जख्मी कर दिया था। युद्ध की आग में गाजा को लगातार झुलसाने वाले इस देश को गुरुवार तड़के ठीक उन्हीं परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। कोई दो राय नहीं कि युद्ध हमेशा विनाश की ओर ले जाता है। दो देशों के बीच प्रतिशोध की आग बेकसूर नागरिकों को ही झुलसाती है। दुनिया ने यह दृश्य कई बार देखा है। सैन्य हमले के दौरान इजराइल ने कभी नहीं देखा कि वह शरणार्थी शिविरों पर बम गिरा रहा है या अस्पतालों पर। नागरिक ठिकानों पर कितनी मौतें होंगी और बच्चों-महिलाओं तथा बुजुर्गों पर क्या गुजरेगी। उसे कभी मानवीय संवेदना की परवाह नहीं रही। दूसरी ओर इजराइल के भीषण हमले के जवाब में ईरान की सैन्य कार्रवाई से साबित हो गया कि वह भी उतना ही असंवेदनशील है। दक्षिणी इजराइल के मुख्य अस्पताल को निशाना बना कर उसने स्पष्ट कर दिया कि वह भी युद्ध नियमों को नहीं मानता। कुछ मिसाइलें इमारतों पर गिरीं, जिससे कई नागरिक घायल हो गए। ईरान के परमाणु कार्यक्रमों को अपने अस्तित्व के लिए खतरा बता कर इजराइल ने जिस तरह से उसके साथ युद्ध छेड़ा है, इसके नतीजे बेहद गंभीर हो सकते हैं। दुनिया के बड़े हिस्से में इसका असर दिख सकता है। ईरान की इस चेतावनी को गंभीरता से लेने की जरूरत है कि अगर अमेरिका युद्ध में कूदा तो भीषण तबाही होगी। तेहरान खाली करने की अमेरिकी राष्ट्रपति की धमकी और ईरानी नेतृत्व के बयान से लगता है कि इजराइल के साथ उसका सैन्य टकराव तीक्ष्ण रूप से बढ़ेगा। स्वाभाविक है कि इस युद्ध के जख्म गहरे होंगे। इसकी कीमत वे नागरिक ही चुकाएंगे जिनका युद्ध से कोई संबंध नहीं। न जाने कितने बच्चे अनाथ होंगे।

क्या यह तीसरे विश्व युद्ध का आरम्भ है!

डॉ. मुकेश गर्ग
(लेखक एक स्वतंत्र उद्यमी, विचारक, ब्लॉगर एवं यू ट्यूबर है)

इजराइल पश्चिम एशिया का एक ऐसा यहूदी देश है जो चारों और से यमन, तुर्की तथा लेबनान जैसे मुस्लिम देशों से घिरा हुआ है। इजराइल और गाजापट्टी (फिलिस्तीन) दोनों ऐसे छोटे देश है जो कभी एक देश हुआ करते थे तथा प्रभु यीशु के जन्म स्थल एवं पैगम्बर मोहम्मद साहब के जन्म स्थलको लेकर चल रहे लंबे विवाद के कारण यहूदियों एवं मुस्लिमों में नफरत के आधार पर विभाजित हुए थे लेकिन विभाजित होने के बाद भी अक्सर दोनों देशों की सेनाएं एक दूसरे पर आक्रमण करते रहते है।

इजराइल लगभग 80 लाख ईसाई धर्म के उदगम वाले यहूदी धर्म के लोगों से बसा एक छोटा देश है तथा चारो और से मुस्लिम कट्टरपंथी देशों से घिरा हुआ है इसलिए यहां का प्रत्येक नागरिक राष्ट्रभक्त है तथा अपने वजूद से अधिक शक्तिशाली है। इजराइल तकनीकी रूप से विश्व का सबसे अधिक विकसित देश है तथा इसकी सेना विश्व के आधुनिकतम हथियारों से सुसज्जित अति शक्तिशाली सेना है जो अपने से कई गुना अधिक शत्रु सेनाओं का मुकाबला करने में सक्षम है। इजराइल से लगभग 2000 किमी दूर बसे बड़े मुस्लिम देश ईरान से इजराइल की पुरानी दुश्मनी है तथा ईरान पाकिस्तान के बाद दूसरा मुस्लिम परमाणु देश बनना चाहता है जिसके लिए वह भारी मात्रा में यूरेनियम संवर्धन का कार्य कर रहा है।

इजराइल नहीं चाहता कि कोई भी मुस्लिम देश परमाणु संपन्न देश बने क्योंकि उसकी सोच यह है कि मुस्लिम की सोच 'डर्टी' सोच होती है इसलिए इनके द्वारा बनाया गया परमाणु बम भी डर्टी बम है जो इजराइल के अस्तित्व के लिए सबसे बड़ा खतरा है।

ईरान द्वारा भारी मात्रा में यूरेनियम संवर्धन किए जाने के कारण इजराइल ने इसे रोकने के लिए ईरान पर एकसाथ 200 फाइटर्स प्लेन से हमला करते हुए न केवल वहां के 14 परमाणु वैज्ञानिक को खत्म कर डाला अपितु 20 बड़े ईरानी सैनिक अधिकारियों को भी मार गिराया।

अपने भारी हमले में इजराइल ने ईरान के तेल के कुओं तथा गैस भंडारों को भी फूंक डाला जबकि ईरान ने जवाबी हमले करते हुए इजराइल पर 1000 से अधिक मिसाइल दागे लेकिन इजराइल के अभेद एयर डिफेंस सिस्टम 'आयरन डोम 'ने उनमें से 90% मिसाइलों को रास्ते में ही ध्वस्त करके युद्ध में बढ़त हासिल कर ली। अमेरिका इन परिस्थितियों में इजराइल के साथ आया है तो चीन, यमन एवं लेबनान खुल कर ईरान के साथ आ गए है।

ऐसे में क्या तीसरे विश्व युद्ध का बिगुल बज गया है अथवा दोनों देशों में सुलह की कोई संभावना बची है, जरा सोचिए...

कहानी- पछतावा

डॉ. आनन्द शर्मा

कुछ कहानी ऐसी होती हैं कि वह कहीं लिखी नहीं जाती, वह पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से चलती जाती हैं, क्योंकि वर्तमान पीढ़ी तो अब फोन पर ही सारी जानकारी ले रही है। बड़े बुजुर्गों के साथ वह उस तरह से जुड़ी हुई नहीं है जैसे कि हमारी पीढ़ी थी। शाम होते ही जिज्ञासा से हम सब अपने बाबा- दादी, नाना- नानी, चाचा- चाची बड़ों से जरूर रात में कहानी सुनाने के लिए आग्रह करते थे।यह सारी कहानियां बच्चों में नैतिकता और आदर्श स्थापित करने में बड़ी भूमिका निभाती थी। ऐसी कहानी जो अक्सर हमारे बुजुर्ग सुनाया करते थे। कि किस तरह से व्यक्ति बिना सोचे समझे गलत कार्य करता है और फिर उसका जीवन भर पछतावा करता है। बताते हैं कि एक बार एक जंगल में एक शिकारी, शिकार का पीछा करते-करते दूर तक निकल गया बहुत दूर तक जाने पर उसे लगा कि शायद में थोड़ा रास्ता भटक गया है। चारों तरफ दौड़ता रहा, कुछ देर बाद उसे बहुत जोर से प्यास लगने लगी।तो वह पानी की तलाश में इधर-उधर भटकने लगा। तभी उसे कुछ दूरी पर एक पहाड़ी से हल्के से झरने और पानी टपकने की आवाज आई। प्यासे व्यक्ति को अगर पानी मिल जाए तो उसकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं होता। वह उस पहाड़ी के समीप पहुंचा जहां से बूंद बूंद पानी टपक रहा था। उसने अपनी दोनों हाथों से अंजलि बनाई ताकि वह पानी इकट्ठा करके पी सके। तभी अचानक उड़ते हुए बाज ने आकर उसके हाथों पर चोंच मारी जिससे उसकी अंजलि में भरा पानी बिखर गया। उसने फिर प्रयास किया और जैसे ही अंजलि पानी से भरी बाज ने फिर चोंच मार कर उसे गिरा दिया। वह शिकारी बाज की हरकत पर खीच उठा और उसने निशान लगाकर बाज को मार दिया। बाज मरकर जमीन पर गिर पड़ा। उसने भी सोचा कि यहां से पानी क्या पीना थोड़ा ऊपर चलकर ही देखता हूं क्या पता पानी एक जगह इकट्ठा हो और वहां अच्छे से पी सकूंगा। वह हिम्मत करके उस ऊंची सी पहाड़ी पर पहुंचा तो उसने देखा की ऊपर एक विषैला सांप मरा हुआ है और उस पानी में डूबा हुआ है जहां से वह पानी धीरे - धीरे नीचे टपक रहा है। उसने सोचा कि यदि वह इस पानी को पी लेता तो वह अब तक मर चुका होता। वह अपने किए पर बहुत पछताता हैं उसे समझ आता है कि बाज क्यों बार-बार उसकी हथेली में आकर चोंच मार रहा था, ताकि वह जहरीले पानी को ना पिए जबकि उसने बाज को ही अपना दुश्मन समझा और उसे मार दिया। अपनी इस गलती पर वह व्यक्ति बहुत पछताया उसकी जान तो बच गई किंतु बाज नहीं बच पाया। जो उसका हितैषी था। हमारे जीवन में भी कभी-कभी ऐसी ही घटनाएं होती है, कभी-कभी हमारे आसपास के लोग हमारी सलामती और सुरक्षा के लिए बहुत सारे प्रयत्न करते हैं किंतु हम उन्हें अपना दुश्मन मानकर उन्हें ही निपटा देते हैं, जबकि वह हमारे सच्चे हितैषी होते हैं। बाद में रह जाता है केवल पछतावा।

श्रृंगी ऋषि के राम

ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी को इस जन्म में अक्षरबोध न होने पर भी, एक विशेष समाधि अवस्था में, शवासन की मुद्रा में लेट जाने पर पूर्व जन्मों की स्मृति के आधार पर, भगवान राम के दिव्य जीवन को प्रवचनों में साक्षात वर्णित किया है

ब्रह्मचारी कृष्ण दत्त जी का जन्म 27 सितम्बर, सन 1942 को गाजियाबाद जिले के ग्राम खुर्रमपुर-सलेमाबाद में हुआ, वे जन्म से ही जब भी सीधे, श्वासन की मुद्रा में लेट जाते या लिटा दिये जाते, तो उनकी गर्दन दायें-बायें हिलने लगती, कुछ मन्त्रोच्चारण होता और उपरान्त विभिन्न ऋषि-मुनियों के चिन्तन और घटनाओं पर आधारित 45 मिनट तक, एक दिव्य प्रवचन होता। पर इस जन्म में गरीब परिवार में जन्म लेने के कारण अक्षर बोध भी न कर सके, ऐसे ग्रामीण बालक के मुख से ऐसे दिव्य प्रवचन सुनकर जन-मानस आश्चर्य करने लगा, बालक की ऐसी दिव्य अवस्था और प्रवचनों की गूढ़ता के विषय में कोई भी कुछ कहने की स्थिति में नहीं था। इस स्थिति का स्पष्टीकरण भी दिव्यात्मा के प्रवचनों से ही हुआ, कि यह आत्मा सृष्टि के आदिकाल से ही विभिन्न कालों में, श्रृङ्गी ऋषि की उपाधि से विभूषित और इसी आत्मा के द्वारा राजा दशरथ के यहाँ पुत्रेष्टि याग कराया गया, और अब जब वे समाधि अवस्था में पहुँच जाते है तो पूर्व जन्मों की स्मृति के आधार पर प्रवचन करते, यहाँ प्रस्तुत हैं उनके उनके द्वारा साक्षात देखा गाया, भगवान् राम का दिव्य जीवन)

भाग 24
गतांक से आगे .....

क्रिया में ज्ञान

माता अरुन्धती ने कहा, ''हे ब्रह्मचारियो! यह वाक्य तुम्हें स्मरण होगा; इसीलिए मानव को अपने जीवन को क्रियात्मक में लाने के लिये अनुसन्धान करना है, विचार करना है कि जो हमने ज्ञान पाया है, उस ज्ञान को हम क्रिया में लाना चाहते हैं, क्रिया में कैसे आता है? एक मानव ने यह दृष्टिपात किया कि हमने योग को दृष्टिपात किया। योग है, अब योग को क्रियात्मक में लाना चाहते हैं। योग दो प्रकार के रूपों में विभक्त हो जाता है एक योग हठ में विभक्त हो गया है; एक राज-योग में विभक्त हो गया। साधना के क्षेत्र में प्रवेश मानव जब अपने को क्रिया में लाना प्रारम्भ करता है, तो दो विभागों में वे ही योग परिणित हो गया है, और विभक्त प्रतिक्रियाओं में हमारे यहाँ ध्यान-योग में इसे राज-योग कहते हैं, एक हठ योग में जैसे हठ-योग प्राणायाम का है। प्राण को कैसे हम सुसज्जित करना चाहते हैं और साधना में हम कैसे प्राण को लाना चाहते हैं। हम अपान और उदान दोनों का समावेश करना चाहते हैंतो कैसे हो सकता है? तो ये सब हठ योग प्रदीपन का हठ योग में परिणित होना कहा जाता है। परन्तु एक वह योग जिसमें शान्त मुद्रा में विद्यमान हैं, जो स्वाभाविक क्रिया-कलाप हो रहा है प्रकृति का, प्रकृति अपने में ध्रुवा-ऊर्ध्वा में गति कर रही हे; कहीं ध्रुवा में है, कहीं ऊर्ध्वा में है, जो स्वतः गति कर रही है। प्राण की इस प्रकार की प्रतिक्रियाओं को अपने में ध्यानावस्थित करने का नाम ध्यानयोग कहते है, तो जब इसको मानव करता है तो इससे विवेक की प्रतिभा का जन्म होता है, विवेक जागरूक हो जाता है। जब मानव क्रियात्मक में अपने जीवन को ले जाता है।''

उपासना

माता अरून्धती दीक्षान्त में अपने उपदेश दे रही थीं उच्चारण कर रही थीं, ''मानव को क्रिया में प्रवेश करना है। वेद की विदुषी कहती हैं, ''हे ब्रह्मचारियो! ब्रह्मवेत्ताओं ने मुझे आज्ञा दी है कि मैं दीक्षान्त के ऊपर अपना उपदेश दूँ। परन्तु द्वितीय हमारे यहाँ ज्ञान, कर्म और उपासना कहे जाते। उपासना का अभिप्रायः क्या है? उपासना हम किसे कहते हैं? परमात्मा की उपासना करना ही हमारे लिये सर्वोपरि कहा जाता है। उस उपासना का अभिप्रायः क्या है?, हमें प्रत्येक वस्तु की उपासना करनी है। उपासना का अभिप्रायः यह है कि जैसी वस्तु है वैसा ही उच्चारण करना, यह उसकी उपासना कही जाती है। जैसे कोई वस्तु है नहीं, यदि हम अपनी विडम्बना से उसकी ऊँची-ऊँची कल्पना करते हैं, तो यह उसकी पूजा नहीं कहलाती। पूजा का अभिप्रायः यह है कि जैसी कोई वस्तु है, उसको उसी रूप में स्वीकार करना वह उसकी पूजा का एक अप्रेत कहा जाता है।''

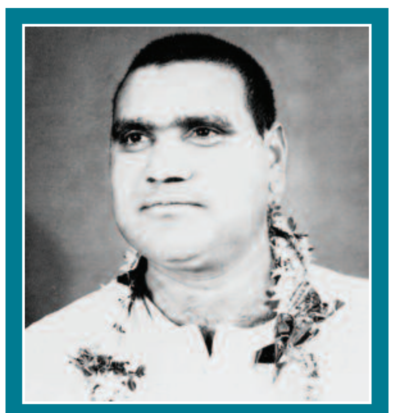

ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी

उपासना में गान-विद्या

तो मानव अग्नि की पूजा करना चाहता है, अग्नि को अपने में धारण करना चाहता है। अग्नि के तेजोमयी जीवन को अपने में ला करके वह गान गाना चाहता है। गान गाता रहता है, उपासना के द्वार पर पहुँचा, तो गान गाने लगा। अग्नि का गान गाता है, प्राण के स्वरूप में, प्राण और अग्नि का, वायु और अग्नि का दोनों का परस्पर सम्बन्ध रहता है। जब वह गान गाने लगता है, गान गाता हुआ वाणी भी अग्नि का स्वरूप बन करके रहती है। तो दोनों का सूत्र बन करके गान रूप में सफलता को प्राप्त हो गया। गान भी कई प्रकार के होते हैं, उपासना काण्ड में हम जब गान गाते हैं तो गान में कहीं दीपावली-गान कहा जाता है, कहीं रूद्र-गान कहा जाता है, कहीं खेंचरी गान कहा जाता है। इसके भिन्न-भिन्न प्रकार माने गये हैं। जैसे गान के रूप में हमारे यहाँ माला पाठ का गान कहलाता है, जटा-पाठ, घन-पाठ ये सब गान कहलाते हैं। परन्तु जब गान के क्षेत्र में मानव प्रवेश करता है तो वह उपासना करता है। उपासना किसकी कर रहा है? जैसी जो वस्तु है, उसको वैसा ही स्वीकार करना, यह उसका गान कहा जाता है, यह उसकी उपासना कही जाती है। जैसे हम अग्नि की पूजा करना चाहते हैं तो हम अग्नि को अपने में धारण करना चाहते हैं, हम तेजोमयी बनना चाहते हैं। तो अग्नि के रूपों में हमें वो अग्नि स्वीकार करनी होगी। क्रमशः....

क्षत्रिय सम्राट् वरुण एवं उनके पुत्र महर्षि भृगु

डॉ. जितेंद्रकुमार सिंह 'संजय'

क्षत्रिय सम्राट् वरुण सर्वश्रेष्ठ वैदिक देवता हैं, जिन्हे वैदिक वाङ्मय में आकाश का एवं वैदिकोत्तर वाङ्मय में समुद्र का प्रतीक माना गया है। वैदिक वाङ्मय इन्द्र के साथ वरुण को भी एक महत्तम देवता स्वीकार किया गया है। नियमित रूप से प्रकाशित होने वाले मित्र (सूर्य) देवता से सम्बन्धित होने के कारण वैदिक वाङ्मय में वरुण सृष्टि के नैतिक एवं भौतिक नियमों के सर्वोच्च प्रतिपालक माने गये हैं। वैदिकोत्तर साहित्य में सृष्टि के सर्वोच्च देवता के रूप में प्रजापति का विकास होने पर, वरुण का श्रेष्ठत्त्व शनैः शनैः न्यून होता गया एवं इनके भूतपूर्व अधिराज्य में से केवल जल पर ही इनका प्रभुत्व रह गया। इसी कारण उत्तरकालीन साहित्य में वरुण को केवल समुद्र का देवता कहा गया है।

सम्राट् वरुण का मुख (अनीकम्) अग्नि के समान तेजस्वी है एवं सूर्य के सहस्त्र नेत्रों से वे मानव-जाति का अवलोकन करते हैं (ऋग्वेद 7/34/88)। इसी कारण वरुण को 'सूर्यनेत्री' कहा गया है (ऋग्वेद 7/66)। मित्र एवं त्वष्टा के भाँति वरुण भी सुन्दर हाथोंवाले (सुपाणि) हैं एवं एक स्वर्णद्रापि एवं द्युतिमत् वस्त्र यह परिधान धारण करते हैं (ऋग्वेद 10/25)। इनका रथ सूर्य के समान द्युतिमान् है, जिसमें स्तम्भों के स्थान पर नत्रियाँ लगी हैं। (ऋग्वेद 1/122)। शतपथब्राह्मण में वरुण को श्वेतवर्ण, गंजा एवं पीले नेत्रोंवाला वृद्ध पुरुष कहा गया है (शतपथब्राह्मण 13/3/6)।

मित्र एवं वरुण का गृह स्वर्णनिर्मित है एवं वह द्युलोक में स्थित है (ऋग्वेद 5/67)। वरुण के गृह में सहस्त्रद्वार हैं, जहाँ वे सहस्त्रस्तम्भोंवाले आसन (सदस) पर बैठते हैं (ऋग्वेद 5/68)। अपने इस भवन में (पस्त्यासु) बैठ कर वरुण समस्त सृष्टि का अवलोकन करते हैं (ऋग्वेद 1/25)। सर्वदर्शी सूर्य अपने गृह से उदित होकर, मनुष्यों के कृत्यों की सूचना मित्र एवं वरुण को देते हैं (ऋग्वेद 7/60)।

वरुण के गुप्तचर (स्पशः) द्युलोक से उतरकर संसार में भ्रमण करते हैं एवं सहस्त्र नेत्रों से युक्त होने के कारण सम्पूर्ण संसार का निरीक्षण करते हैं (अथर्ववेद 4/16)। सम्भवतः आकाश में स्थित तारों को ही वरुण का दूत कहा गया है। ऋग्वेद में सूर्य को ही वरुण का स्वर्ण पंखोंवाला दूत कहा गया है (ऋग्वेद 10/123)। ईरान के 'मिथ' देवता के गुप्तचर भी 'स्पश' नाम से प्रसिद्ध हैं, जो वैदिक वाङ्मय में निर्दिष्ट मित्र एवं वरुण के गुप्तचरों से काफी मिलते-जुलते हैं।

मित्र के साथ केवल वरुण को देवों का, मनुष्यों का तथा समस्त संसार का सम्राट् कहा गया है (ऋग्वेद 1/132;5/85)। ऋग्वेद में यह उपाधि प्रायः इन्द्र को प्रदान की जाती है, किन्तु वह वरुण को इन्द्र से भी अधिक बार प्रदान की गयी है। ऋग्वेद में वरुण को सार्वभौम सत्ता (क्षत्र) का एवं एकछत्र शासक (क्षत्रिय) होने के नाते अनेक बार निर्देश प्राप्त है। सम्राट् वरुण के क्षत्रियत्व का स्पष्ट उल्लेख ब्राह्मणग्रन्थों एवं उपनिषदों में किया गया है। बृहदारण्यकोपनिषद् एवं शतपथब्राह्मण में कहा गया है- ब्रह्म वा इदमग्र आप्सीदेकमेव तदेक सन्न व्यभवत्। तच्छ्रेयो रूपमत्यसृजत क्षतं यान्येतानि देवत्रा क्षत्राणीन्द्रो वरुणः सोमोरुद्रः पर्जन्यो यमो मृत्युरीशान इति। तस्मात् क्षत्रात्परं नास्ति तस्माद् ब्राह्मणः क्षत्रियमधस्तादुपास्ते राजसूये क्षत्र एवं तद्यशो तधाति सैषा क्षत्रस्य योनिर्यद् ब्रह्म।

- बृहदारण्यकोपनिषद् 1/4/11; शतपथब्राह्मण 14/4/2/23

अर्थात आरम्भ में यह (क्षत्रिय तथा अन्य जातियाँ) वास्तव में ब्रह्म थीं, एक ही, दूसरा नहीं। एक होने के कारण वे फले-फूले नहीं। उन्होंने आगे एक उत्कृष्ट रूप, क्षत्रियत्व प्रक्षेपित किया- देवताओं में वे क्षत्रिय (शासक)- इन्द्र, वरुण, सोम (चन्द्रमा), रुद्र, पर्जन्य, यम, मृत्यु (मृत्यु) और इशान। इसलिए क्षत्रियों से बड़ा कोई नहीं है। इस प्रकार राजसूय यज्ञ में ब्राह्मण नीचे बैठता है और क्षत्रिय की पूजा करता है। वह यह गौरव केवल क्षत्रियत्व को प्रदान करता है।

सम्राट् वरुण को प्रकृति के नियमों का महान् अधिपति कहा गया है। इन्होंने ही द्युलोक एवं पृथ्वी की स्थापना की एवं इनके विधान के कारण ही द्युलोक एवं पृथ्वी पृथक पृथक हैं (ऋग्वेद 6/70; 8/42)। वरुण ने ही अग्नि की जल में, सूर्य की आकाश में एवं सोम की पर्वतों पर स्थापना की (ऋग्वेद 5/85)। वायुमण्डल में भ्रमण करनेवाला वायु, वरुण का ही श्वास है (ऋग्वेद 7/87)।

पृथ्वी पर रात्रि एवं दिन की स्थापना वरुण के द्वारा ही की गयी है एवं उनका नियमन भी वरुण ही करते हैं। रात्रि में दिखायी देनेवाले चन्द्र एवं तारक इनके कारण ही प्रकाशित होते हैं (ऋग्वेद 1/24)। इस प्रकार जहाँ मित्र केवल दिन के दिव्य प्रकाश के अधिपति हैं, वहीं वरुण को रात एवं दिन दोनों के ही प्रकाश का अधिपति माना गया है।

ऋग्वेद में मित्र एवं वरुण को अनेक बार असुर (रहस्यमय व्यक्ति) कहा गया है (ऋग्वेद 1/35/7; 2/7/10; 7/65/2; 8/42/1)। वरुण एवं मित्र को रहस्यमय एवं उदात्त (असुर आर्य) भी कहा गया है (ऋग्वेद 7/65)। ऋग्वेद में अन्यत्र इनकी माया (गुह्य-शक्ति) का निर्देश प्राप्त है एवं अपनी इस माया के द्वारा सूर्यरूपी परिमापनयन्त्र के द्वारा ये पृथ्वी को नापते हैं, ऐसा भी कहा गया है (ऋग्वेद 5/85)। यहाँ 'असुर' एवं 'गुह्यशक्ति' ये दोनों शब्द गौरव के आशय में प्रयुक्त किये गये हैं।

वरुण-देवता का अन्वयार्थ करते हुए डॉ. रा.ना. दाण्डेकरजी लिखता हैं- समस्त सृष्टि का संचालन करने की 'यात्त्वामक' अथवा आसुरी शक्ति वरुण के प्राप्त थी, जिस कारण इन्हें वैदिक साहित्य में असुर (असु नामक शक्ति से युक्त) कहा गया है। इसी आसुरी माया के कारण, वरुण निसर्ग, देव एवं मनुष्यों के सम्राट् बन गये थे एवं इसी अपूर्व शक्ति के कारण वैदिक साहित्य में वरुण को यक्षिन (जादुगर) कहा गया है (ऋग्वेद 7/88/7)।

वरुण की इस आसुरी शक्ति का उद्गम निम्नांकित प्रकार बताया जा सकता है। वैदिक आर्यों ने जब देखा कि इस सृष्टि का जीवनक्रम प्रचण्ड होकर भी अत्यन्त नियमबद्ध एवं व्यवस्थापूर्ण है, तब इस नियमबद्ध सृष्टि का संचालन करनेवाले देवता की कल्पना उनके मन में स्फूर्त हो गयी।

आकाश में प्रतिदिन प्रकाशित हो कर अस्तंगत होनेवाले सूर्य-चन्द्र एवं तारक, अपने नियत मार्ग से बहनेवाली नदियाँ एवं अपने नियतक्रम से बदलनेवाली ऋतु को देखकर, इस सारे विश्वचक्र का संचालन करनेवाली कोई-न-कोई अदृश्य देवता होने ही चाहिए, ऐसी धारणा उनके मन में उत्पन्न हुई। इसी अदृश्य शक्ति अथवा देवता को वैदिक आर्यों के द्वारा वरुण कहा गया। वरुण ही अपनी दैवी शक्ति (माया) के द्वारा सृष्टि का संचालन करते हैं, यह अवधारण प्रचलित हो गयी।

वैदिक वाङ्मय के अनुसार सम्राट् वरुण अपने सृष्टि-संचालन का यह कार्य सृष्टि के सारे चर एवं अचर वस्तुमात्रों को बन्धन में रखकर करते हैं। अपनी 'माया' के कारण वरुण ने अनेक पाश निर्मित किये हैं, जिनकी सहायता से पृथ्वी के समस्त नैसर्गिक शक्तियों को वे बाँध देते हैं और इसी प्रकार सम्पूर्ण सृष्टि का नियमन करते हैं।

इतना ही नहीं धैर्यशाली वरुण देवता अपने नियमनों के द्वारा वैश्विक धर्म (ऋत) का संरक्षण करने के लिए पापी लोगों का अनुशासित भी करते हैं। इस तरह वैदिक साहित्य में वरुण देवता के दो रूप दृग्गत होते हैंझ 1. बन्धक वरुण, जो सृष्टि के सारे नैसर्गिक शक्तियों को बाँध कर योजनाबद्ध बनाते हैं, 2. शासक वरुण, जो अपने पाशों के द्वारा आज्ञा पालन न करनेवाले लोगों को अनुशासित करते हैं। आगे चल कर वैदिक आर्यों को अनेकानेक मानवी शत्रुओं के साथ सामना करना पड़ा, जिस कारण युद्ध में शत्रु पर विजय प्राप्त करनेवाले विजिगिषु एवं जेतृस्वरूपी नये देवता की आवश्यकता उन्हें प्राप्त होने लगी। इसलिए इन्द्र नामक नये देवता का वैदिक साहित्य में निर्माण हुआ एवं आर्यों के द्वारा अपने नये युयुत्सु ध्येय-धारणा के अनुसार उन्हें राष्ट्रीय देवता के रूप में स्वीकार किया गया। इन्द्र के प्रतिष्ठापना के पश्चात्, वरुणदेवता की 'विश्वव्यापी सम्राट्' उपाधि शनैः शनैः विलीन हो गयी एवं सृष्टि के अनेक विभागों में से, केवल समुद्र के ही स्वामी के रूप में उनका महत्व मर्यादित किया गया।

ब्राह्मणग्रन्थों में भृगुवंश के प्रवर्तक एवं भगवान्-परशुराम के आदिपूर्वज महर्षि भृगु को 'वारुणि भृगु' कहा गया है। पञ्चविंशब्राह्मण में भृगु को वरुण के वीर्यस्खलन से उत्पन्न हुआ कहा गया है (पञ्चविंशब्राह्मण 18/9/1)। शतपथब्राह्मण के अनुसार वरुण द्वारा भृगु उत्पन्न किये गये एवं उन्हीं के द्वारा भृगु को ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति हुई, जिस कारण उनको 'भृगु वारुणि' नाम प्राप्त हुआ (शतपथब्राह्मण 11/6/1/1; तैत्तरीय आरण्यक 9/1; तैत्तरीयोपनिषद् 1/3/1/1)।

महर्षि भृगु के क्षत्रिय सम्राट् वरुण के पुत्र होने और उनकी वंशावली का सन्दर्भ महाभारत में भी प्राप्त होता है-

निसर्गाद्ब्रह्मणश्चापि वरुणो यादसाम्पतिः।
जग्राह वै भृगु पूर्वमपत्यं सूर्यवर्चसम्।।
ईश्वरोऽङ्गिरसं चाग्नेरपत्यार्थमकल्पयत्।
पितामहस्त्वपत्यं वैकविं जग्राह तत्त्ववित्।।
तदा स वारुणिः ख्यातो भृगुः प्रसवकर्मकृत्।
आग्नेयस्त्वङ्गिराः श्रीमान्कविर्ब्राह्मो महायशाः।
भार्गवाङ्गिरसौ लोके लोकसन्तानलक्षणौ।।
एते विप्रवराः सर्वे प्रजानां पतयस्त्रयः।
सर्वं सन्तानमेतेषामिदमित्युपधारय।।
भृगोस्तु पुत्राः सप्तासन्सर्वे तुल्या भृगोर्गुणैः।
च्यवनो वज्रशीर्षश्च शुचिरौर्वस्तथैव च।।
शुक्रो वरेण्यश्च विभुः सवनश्चेति सप्त ते।
भार्गवा वारुणाः सर्वे येषां वंशे भवानपि।।
-महाभारत 13/132/36-41

भगवान् परशुराम के नाना सम्राट् प्रसेनजित का जन्म अयोध्या के सम्राट् वैवस्वत मनु की 19वीं पीढ़ी में और भगवान श्रीराम का जन्म 70वीं पीढ़ी में हुआ था। सम्राट् प्रसेनजित् की पुत्री राजकुमारी रेणुका का विवाह महर्षि जमदग्नि से हुआ था। यह सन्दर्भ भी महाभारत में वर्णित है-

स प्रसेनजितं राजन्नाधिगम्य नराधिपम।
रेणुकां वरयामास स च तस्मै ददौ नृपः।।
रेणुकां त्वथ संप्राप्य भार्यां भार्गवनन्दनः।
आश्रमस्थस्तया सार्धं तपस्तेपेऽनुकूलया।।
-महाभारत 3/117/2

RNI No. 62592/95 स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक चंद्रशेखर शास्त्री ने भारती प्रिंटर्स, निकट पुरानी स्टील चुंगी, लोअर बाजार, मोदीनगर-201204, गाजियाबाद उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं प्रकाशित किया।
सम्पादकः चन्द्रशेखर शास्त्री, मोबाइलः 7351200046/9411246969, email: u.p.observer@gmail.com

हरिद्वार में लिखी गई योग दिवस की पटकथा

स्वामी रामदेव और आचार्य बालकृष्ण के स्वप्न को संयुक्त राष्ट्र संघ ने किया साकार

कौशल सिखौला
(वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक)

तीस वर्ष पूर्व हरिद्वार की धरती से योग की उड़ान शुरू करते हुए बाबा रामदेव ने एक जीता जागता स्वप्न देखा था। उसकी चर्चा उन्होंने कुछ मित्रों से भी की थी । बाबा ने कहा था कि महर्षि पतंजलि प्रणीत अष्टांग योग को आध्यात्मिक नगरी हरिद्वार से वह उड़ान देनी है कि ऋषि मुनियों के ज्ञान को यूएनओ के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का दर्जा मिल जाए । तब भले ही लोगों को यह कल्पना लगी हो, लेकिन प्रधानमंत्री ने यूएनओ में प्रस्ताव रख कुछ वर्ष पूर्व इसे साकार कर दिखाया । 2015 से प्रत्येक 21 जून को पूरा विश्व अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाता है । योग दुनिया के 195 देशों में किया जाता है और कई देशों ने इसे पाठ्यक्रम में भी शामिल किया है।

- 30 वर्षों की तपस्या रंग लाई
- प्रधानमंत्री के प्रयास सफल हुए

यूं तो हरिद्वार ऋषिकेश की साधना भूमि सप्तऋषियों के जमाने से योग , ज्ञान , अध्यात्म और आयुर्वेद का गढ़ रही है , लेकिन 1995 में बाबा रामदेव तथा आचार्य बालकृष्ण के पदार्पण से योग की दिशा ही बदल गई। देखते ही देखते कनखल कृपालु बाग आश्रम स्थित दिव्य योग मंदिर विख्यात होता गया । प्रचार माध्यमों के माध्यम से चर्चा फैल गई कि हरिद्वार में हिमालय से उतरकर कोई योगी आया है जो योग क्रांति के सूत्र गढ़ रहा है।

देशभर में चलाए गए योग शिविरों के माध्यम से बाबा ने योग की गंगा सर्वत्र बहा दी। दिव्य योग मंदिर से निकलकर विशाल पतंजलि योगपीठ और योग ग्राम की स्थापना की । अनेक क्लिनिकल ट्रायल्स के माध्यम से योग की महत्ता को प्रतिपादित किया गया । फिर बाबा रामदेव द्वारा विदेशों में लगाए गए योग शिविरों ने भारत के इस प्राचीन योग विज्ञान को सर्वत्र फैला दिया । विदेशी बाबा से इस कदर प्रभावित हुए कि एक भक्त ने ब्रिटेन के एक द्वीप को ही बाबा के नाम कर दिया ।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के लिए बाबा की मुहिम को प्रधानमंत्री ने सरकार बनने के बाद आकार दिया । मोदी के गुजरात के मुख्यमंत्री रहते हुए भी बाबा रामदेव से घनिष्ठ संबंध थे । पीएम बनने के बाद भी मोदी पतंजलि योगपीठ आए और पहले भी । बाबा और प्रधानमंत्री के बीच योग दिवस को यूएनओ से दर्जा दिलाने को लेकर पतंजलि में पटकथा लिखी गई।

प्रधानमंत्री ने बाद में स्वयं संयुक्त राष्ट्र संघ में योग दिवस का प्रस्ताव रखा जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया । वर्ष 2015 से आज तक दुनिया के 203 देशों में अच्छा स्वास्थ्य पाने के लिए योग किया जा रहा है । इस साल फिर योग दिवस पर दुनियाभर में ओंकार की प्रणव ध्वनि गुंजाएमान हो रही है ।

योग को लेकर विश्व के आधुनिक चिकित्सा जगत में भी बहुत रुचि जागृत हुई है । दिव्य योग मंदिर के जमाने से साधकों पर योग के क्लिनिकल ट्रायल्स करते आ रहे हैं। यह काम अब अनुसंधानशाला में हो रहा है।

बाबा रामदेव ने विश्व के अनेक देशों में रोगियों को योग के सहारे से ठीक किया है । यह योग की जीत है। सभी को अपनी दिनचर्या में योग प्राणायाम शामिल कर असाध्य रोगों से मुक्ति पानी चाहिए। आइए योग करें ।

नगर निगम की मुहिम की सांसद अतुल गर्ग ने की प्रशंसा

चौराहों पर लगाई गई ग्रीन जाली मेयर व नगरायुक्त का जताया आभार

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

गाजियाबाद। शहर के सभी प्रमुख चौराहा पर ट्रैफिक को कंट्रोल करने के लिए लाइटें लगी हुई है। बहुत बार अपनी लाइन को खुलने के लिए दोपहिया वाहन को बहुत देर तक इंतजार करना पड़ता है। तपती इस घूप और गर्मी में सड़क पर इंतजार करना मानो सजा के बराबर है ।

इसी राहत के लिए निगम द्वारा प्रमुख चोहराओ पर ग्रीन जाली लगाई गई है। सांसद अतुल गर्ग ने महापौर, नगर निगम कमिश्नर, पार्षद सहित सभी अधिकारियों का आभार प्रकट किया और कहा कि गाजियाबाद के नागरिकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए इस तपती धूप से बचाव के लिए नगर निगम गाजियाबाद द्वारा चौराहों और लालबत्ती पर हरे शेड (ग्रीन नेट) लगाए जाने के लिए मैं मेयर सुनीता दयाल, नगरायुक्त विक्रमादित्य सिंह मलिक समेत सभी अधिकारियों का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। यह पहल निस्संदेह हमारे नागरिकों के जीवन को और अधिक सुविधाजनक व आरामदायक बनाएगी।

साहिबाबाद औद्योगिक क्षेत्र में जलापूर्ति को लेकर जिलाधिकारी ने की समीक्षा बैठक

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

गाजियाबाद। महात्मा गांधी सभागार कलेक्ट्रेट में जिलाधिकारी दीपक मीणा की अध्यक्षता में साहिबाबाद औद्योगिक क्षेत्र में जलापूर्ति व्यवस्था को लेकर एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में नगर निगम द्वारा किए जा रहे प्रयासों की समीक्षा की गई और उद्योगपतियों से भूगर्भ जल का दोहन बंद करने की अपील की गई। नगर आयुक्त विक्रमादित्य सिंह मलिक ने जानकारी दी कि साहिबाबाद औद्योगिक क्षेत्र को जल उपलब्ध कराने के उद्देश्य से इंदिरापुरम में नगर निगम द्वारा 40 एमएलडी क्षमता वाला जल संयंत्र स्थापित किया गया है, जिसका संचालन वबाग एजेंसी द्वारा किया जा रहा है। वर्तमान में 1445 औद्योगिक इकाइयों में से केवल 1002 इकाइयों ने ही निगम से जल कनेक्शन प्राप्त किया है। इस अवसर पर जिलाधिकारी दीपक मीणा ने शेष उद्योगों से अपील की कि वे जल्द से जल्द जल संयंत्र से कनेक्शन प्राप्त करें तथा भूगर्भीय जल का उपयोग करना बंद करें, ताकि जिले में गिरते जल स्तर पर नियंत्रण पाया जा सके। साथ ही उन्होंने जलापूर्ति की गुणवत्ता एवं दबाव को संतुलित बनाए रखने के लिए नगर निगम को निर्देश भी दिए, जिससे किसी भी औद्योगिक इकाई को जल संकट का सामना न करना पड़े। बैठक में जीएम जलकल, भूगर्भ जल नोडल अधिकारी, विभिन्न उद्योगपति एवं अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

महापौर ने ग्रीन बेल्ट को खूबसूरत बनाने के लिए अधिकारियों के साथ किया निरीक्षण

- मेयर ने ग्रीन बेल्ट के सौंदर्यीकरण की डिजाइन तैयार करने के भी दिए निर्देश

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

गाजियाबाद। शहर में ग्रीन बेल्ट को ओर अधिक सुंदर बनाने उनके सौन्दर्यकरण करने के लिए महापौर सुनीता दयाल ने अधिकारियों के साथ निरीक्षण किया। जिसमे वरिष्ठ उद्यान प्रभारी एन के चौधरी, उद्यान प्रभारी डॉ अनुज सिंह, अवर अभियंता उद्यान राजेन्द्र कुमार उपस्थित रहे।

महापौर ने इस के साथ साथ यू पी गेट पर स्थित ग्रीन बेल्ट के सौंदर्यीकरण की डिजाइन तैयार करने के भी निर्देश दिए है । जिससे दिल्ली से यू पी में आते समय कोई अंतर न दिखाई दे और शहर को खूबसूरत बनाया जा सके।

इसके साथ साथ वैशाली रेपिड रेल के नीचे भी ग्रीनलेंड को खूबसूरत बनाने की योजनाएं तैयार की जाएगी और वह से वसुंधरा होते हुए साहिबाबाद रेपिड स्टेशन तक भी सौन्दर्यकरण का कार्य किया जाएगा। महापौर सुनीता दयाल व नगर आयुक्त दोनों मिलकर शहर के 9 स्वच्छ और सुंदर बनाने का कार्य कर रहे है ।

जिसको लेकर महापौर ने भी ग्रीन बेल्ट पर सौंदर्यीकरण के लिए कार्ययोजना तैयार कर ली है । जिसको लेकर अधिकारियों को निर्देशित भी किया है और यह सौन्दर्यकरण दूर से ही दिखाई देगा व शहर में हरयाली बढ़ने के साथ साथ प्रदूषण का स्तर भी कम होगा । जिससे शहरवासियों को भी राहत मिलेगी।

महापौर ने बताया कि हम यह योजना शहर के मुख्य रास्ते से सटी ग्रीन बेल्ट पर बना रहे है । जिस कारण शहर की सड़कें भी सौन्दर्यकरण होने से सुंदर दिखाई पड़ेंगी।

अमरोहा पुलिस व श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में

साईबर सिक्युरिटी राष्ट्रीय कार्यशाला-2025 का शानदार शुभारम्भ

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

लखनऊ। दो सप्ताह तक चलने वाली इस राष्ट्रीय कार्यशाला में इंजीनियरिंग, साईबर प्रबन्धन, साईबर लॉ से सम्बन्धित यू0पी0, दिल्ली, हरियाणा, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, असम, केरल, समेत देश भर के 26 से अधिक राज्यो के 550 से अधिक स्टूडेन्टस एवं ''साईबर सुरक्षा प्रेमी'' कर रहे है प्रतिभाग। हैदराबाद, गुरूग्राम, चण्डीगढ़, बेंगलुरू, दिल्ली, कोलकाता समेत देश के विभिन्न हिस्सों से पधारे 2 दर्जन से अधिक ''साईबर सिक्युरिटी एक्सपर्ट'' आगामी दो सप्ताह तक प्रतिभागियों को सिखाऐगें साईबर काईम से निपटने के गुर।

पुलिस एवं साईबर योद्धाओ को हैकिंग, फिशिंग, डिजीटल अरेस्ट, मेलवेयर, रेसमवेयर, बैकिंग धोखाधड़ी आदि जैसे साईबर अपराधों को अंजाम देने वाले साईबर अपराधियों पर नकेल करने के लिए एवं साईबर सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए अपराधियों से दस गुना आगे सोचना होगा- रमित शर्मा, अपर पुलिस महानिदेशक बरेली जोन मुख्य अतिथि साईबर सिक्युरिटी राष्ट्रीय कार्यशाला 2025। वेंक्टेश्वरा संस्थापक अध्यश सुधीर गिरि ने इस राष्ट्रीय कार्यशाला के लिए यू0पी0 पुलिस को बधाई प्रेषित करते हुए सभी प्रतिभागियो को शुभकामनाएं दी।

बढ़ते साईबर क्राईम ना सिर्फ व्यक्तिगत क्षति के लिए जिम्मेदार, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए बड़ी चुनौती, साईबर अपराधो पर अंकुश लगाने के लिए पुलिस के साथ-2 जागरूक स्टूडेन्टस एवं स्वंयसेवी सस्थाओ को भी आगे आना होगा- आई0पी0एस0 अमित कुमार आनन्द कार्यक्रम संयोजक पुलिस अधीक्षक अमरोहा।

साईबर सुरक्षा डिजीटल धोखधडी, हैकिंग, ई-कार्मस धाखाधडी से सम्बन्धित वेंक्टेश्वरा ने एक दर्जन से अधिक सर्टिफिकेट कोर्स शुरू किये है, ताकि आम जनमानस खुद अपने आप को साईबर अपराधो से बचाकर दूसरे लोगों को भी इस बारे में जागरूक कर सके- डॉ0 राजीव त्यागी, प्रतिकुलाधिपति वेंक्टेश्वरा विश्वविद्यालय।

दो सप्ताह तक चलने वाली इस ''राष्ट्रीय साईबर सुरक्षा कार्यशाला-2025'' के समापन पर 30 जून को देश के विख्यात साईबर एक्सपर्ट एवं यू0पी0 पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी संस्थान प्रबन्धन के साथ मिलकर सभी प्रतिभागियों को सर्टिफिकेट प्रदान करेंगे- श्रीमति अंजलि कटारिया पुलिस उपाधीक्षक अमरोहा एवं मुख्य कोर्डिनेटर ''राष्ट्रीय साईबर सुरक्षा वर्कशॉप-2025''।

आज राष्ट्रीय राजमार्ग बाईपास स्थित श्री वेंकटेश्वरा संस्थान में यूपी पुलिस के संयुक्त तत्वाधान मे देश एवं दुनिया में बढते साईबर अपराधो के मकडजाल को तोडने एवं आजमानस को साईबर अपराधो को रोकने के प्रति जागरूक करने के उददेश्य से ''राष्ट्रीय साईबर सुरक्षा कार्यशाला-2025'' का शानदार आयोजन/ शुभारम्भ किया गया। आगामी पन्द्रह दिनो तक चलने वाली इस राष्ट्रीय कार्यशाला में देश भर से आये साढे पांच सौ से अधिक प्रतिभागियो को देश के जाने माने दो दर्जन से अधिक साईबर एक्सपर्ट साईबर अपराधो की रोकथाम के गुर सिखाये।

श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय/ संस्थान के डॉ0 सी0वी0 रमन सभागार में ''राष्ट्रीय साईबर सुरक्षा कार्यशाला-2025 का शुभारम्भ मुख्य अतिथि वरिष्ठ आई0पी0एस0 अपर पुलिस महानिदेशक यूपी श्री रमित शर्मा पुलिस अधीक्षक अमित कुमार आनन्द, प्रतिकुलाधिपति डॉ0 राजीव त्यागी, अपर पुलिस अधीक्षक अखिलेश भदौरिया, डिप्टी एसपी अंजलि कटारिया, कुलपति श्री कृष्ण कान्त दवे आदि ने सरस्वती माँ की प्रतिमा के सन्मुख दीप प्रज्जवलित करके किया।

इस अवसर पर कुलसचिव प्रो0 पीयूष पाण्डे, डॉ0 राजेश सिंह, डॉ0 सुमन कश्यप, डॉ0 अंजलि भारद्वाज, साईबर एक्सपर्ट मनु शर्मा, डॉ0 स्नेहलता, डॉ0 विकास पाण्डेय, डॉ0 अमित कुमार, दीक्षा, मेरठ परिसर से निदेशक डॉ0 प्रताप सिह, मीडिया प्रभारी विश्वास राणा आदि लोग उपस्थित रहे।

उद्घाटन सत्र के बाद प्रतिकुलाधिपति डॉ0 राजीव त्यागी ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए पुलिस अधीक्षक अमित कुमार के साथ मिलकर सभी को स्मृति चिन्ह भेट कर सम्मानित किया।

जिलाधिकारी ने स्वास्थ्य सुविधाओं का किया औचक निरीक्षण

विश्व बंधु शास्त्री

बागपत। जिलाधिकारी अस्मिता लाल ने आज डौला स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, अमीनगर सराय के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र तथा संयुक्त जिला अस्पताल का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने इमरजेंसी वार्ड, एनआरसी (न्यूट्रीशन रिकवरी सेंटर) तथा ओपीडी की व्यवस्थाओं का गहनता से जायजा लिया।

उन्होंने मुख्य चिकित्सा अधीक्षक एवं उपस्थित चिकित्सकों को साफ-सफाई, दवा भंडारण, रजिस्टर संधारण एवं मरीजों के प्रति संवेदनशील व्यवहार हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने अस्पताल परिसर में साफ-सफाई की स्थिति की समीक्षा करते हुए स्पष्ट कहा कि रोगियों को स्वच्छ वातावरण एवं कुशल चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराना सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि अस्पताल में आने वाले प्रत्येक मरीज के साथ सहानुभूति पूर्वक व्यवहार किया जाए एवं उन्हें बेहतर उपचार मिले, यह सुनिश्चित किया जाए।

ॅउन्होंने दवाओं के स्टॉक की स्थिति, ओपीडी रजिस्टर का रख-रखाव, चिकित्सकों की उपस्थिति तथा मरीजों को दी जा रही सुविधाओं की भी जांच की। जिलाधिकारी ने सभी स्वास्थ्यकर्मियों को निर्देशित किया कि भरोसेमंद और सेवा भावी बने, इसके लिए पूरी निष्ठा से कार्य करें।

बूढ़ी गंगा को पुनर्जीवित करने के लिए सामाजिक संगठनों ने की तैयारियां प्रारंभ

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

गढ़मुक्तेश्वर। गढ़मुक्तेश्वर उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री आदरणीय योगी आदित्यनाथ जी की पहल पर उत्तर प्रदेश के 75 जनपदों में प्रत्येक जनपद में एक नदी का पुनर्जीवन करने हेतु आदेशों के क्रम में हापुड़ जनपद में बूढ़ी गंगा का चयन प्रशासन द्वारा किया जाना निश्चित किया गया है।

जिसके क्रम में आज गढ़मुक्तेश्वर ब्लॉक के खंड विकास अधिकारी विजय कुमार एवं बूढ़ी गंगा पुनर्जीवन अध्ययन यात्रा के संयोजक एवं लोकभारती के क्षेत्र संयोजक पर्यावरणविद् भारत भूषण गर्ग ने पूरी टीम के साथ हापुड़ जनपद में इस नदी के प्रवेश को देखा एवं इसकी मूलभूत समस्याओं को समझा इस नदी की लगभग 8 किलोमीटर की यात्रा के क्रम को पैदल चलकर एवं गाड़ियों के माध्यम से गहनता के साथ देखा। यात्रा का प्रारंभ प्रसिद्ध देव स्थान तपेश्वरी बाबा के आश्रम से संतों का आशीर्वाद प्राप्त करके किया यात्रा के अंतराल में आसपास के किसानों से इसके पुनर्जीवन को लेकर विस्तार से चर्चा वार्ता की गई जिसमें सभी किसानों ने अपना भरपूर सहयोग देने का आश्वासन दिया खंड विकास अधिकारी विजय कुमार ने बताया कि इस नदी की विस्तृत कार्य योजना तैयार करके माननीय जिलाधिकारी को प्रेषित की जाएगी तथा शीघ्र ही इस नदी पर कार्य प्रारंभ हो जाएगा। यात्रा में सह प्रांत संयोजक मूलचंद आर्य जिला संयोजक टीकम सिंह शहर जिला संयोजक विनोद कुमार तहसील संयोजक शीशराम सिंह बूढ़ी गंगा के सहसंयोजक सरदार गुरप्रीत सिंह यात्रा समन्वयक कावल सिंह संदीप शर्मा ब्रह्म प्रकाश सिंह गुरपेज सिंह आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

नोबेल शांति पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी से करुणा और वैश्विक नेतृत्व का पाठ सीख रहे बागपत के अमन कुमार

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

- विश्व के प्रथम करुणा आधारित समर स्कूल के लिए चुने गए 25 युवाओं में अमन भी शामिल

बागपत। 'जहां करुणा होती है, वहीं स्थायी समाधान जन्म लेते हैं।' इसी विचार को साकार करते हुए बागपत के युवा सामाजिक कार्यकर्ता और राज्य युवा पुरस्कार से सम्मानित अमन कुमार का चयन सत्यार्थी समर स्कूल फॉर ग्लोबल कम्पैशन के लिए हुआ है। यह ग्रीष्मकालीन विद्यालय, नोबेल शांति पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी की पहल सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशन द्वारा आयोजित किया जा रहा है। यह अनूठा विद्यालय करुणा पर केंद्रित विश्व का पहला प्रशिक्षण मंच है, जिसमें भारत सहित कई देशों के सिर्फ 25 चुने हुए युवा लीडर्स को भागीदारी का अवसर मिला है। इस गहन आवासीय प्रशिक्षण का आयोजन नई दिल्ली स्थित मुक्ति आश्रम और बाल आश्रम जयपुर में हो रहा है, जहां प्रतिभागी मानवाधिकार, शिक्षा, बाल संरक्षण, जलवायु न्याय और वैश्विक नागरिकता जैसे विषयों पर विशेषज्ञों और पीड़ित समुदायों के अनुभवों से सीख प्राप्त कर रहे हैं। अमन कुमार ने बताया, 'आज जब दुनिया युद्ध, जलवायु संकट, बाल शोषण, लैंगिक असमानता और डिजिटल विभाजन जैसी चुनौतियों से जूझ रही है, तब समाधान की शुरूआत हमारे भीतर निहित करुणा से हो सकती है।' उनका मानना है कि करुणा का वैश्वीकरण ही सतत विकास और वैश्विक शांति की कुंजी है। इस विद्यालय का उद्देश्य युवाओं को ऐसा करुणा-आधारित नेतृत्वकर्ता बनाना है, जो सिर्फ अपनी नहीं, बल्कि पूरे मानव समुदाय की पीड़ा को महसूस कर सके और उसके समाधान के लिए प्रतिबद्ध हो। इस विशेष विद्यालय के समापन पर अमन कुमार सहित अन्य प्रतिभागी युवाओं को विश्व के प्रथम ग्लोबल कम्पेशन एंबेसडर का खिताब मिलेगा जो विश्वभर में करुणा, शांति और सामाजिक न्याय के संदेश को बढ़ावा देंगे।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवसः बागपत में हजारों लोगों ने सामूहिक योग कर दिया 'करो योग रहो निरोग' का संदेश

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

- एक पृथ्वी एक स्वास्थ्य के लिए योग थीम पर जनपद में मनाया गया 11वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

बागपत। भारतीय ऋषि परंपरा के बाहर योग को न केवल भारत में बल्कि दुनिया में प्रतिष्ठित करने का कार्य भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया है। पूरे देश में अंतरराष्ट्रीय योग सप्ताह के रूप में 15 जून से 21 जून तक योग कार्यक्रम संचालित किए गए। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर प्रधानमंत्री द्वारा आँध्र प्रदेश में समुद्र तट पर किए गए योगाभ्यास एवं उद्बोधन का सीधा प्रसारण सम्राट पृथ्वीराज चौहान डिग्री कॉलेज में सूचना एवं जनसंपर्क विभाग द्वारा लगाई गई एलईडी स्क्रीन के माध्यम से हजारों लोगों ने सुना और देखा। अपने जीवन में नित्य प्रतिदिन योग करने का प्रण किया।

प्रातः से लेकर 8 बजे तक जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों, आम जनमानस व जनपद के सभी विभागों के समन्वय से आयोजित इस भव्य योगाभ्यास कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लोगों ने शामिल होकर योग अभ्यास किया। सामूहिक योगाभ्यास में शामिल हुए मुख्य अतिथि प्रदेश सरकार में राज्य मंत्री व जनपद प्रभारी मंत्री जसवंत सिंह सैनी, सांसद डॉक्टर राजकुमार सागवान व शासन द्वारा नामित नोडल अधिकारी खाद रसद आयुक्त भूपेंद्र एस चौधरी, जिलाधिकारी अस्मिता लाल ने धन्वंतरि जी की प्रतिमा पर दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। उन्होंने सबके साथ योगाभ्यास करते हुए सभी को प्रतिदिन योग करने के लिये प्रेरित किया।

प्रभारी मंत्री ने कहा कि योग करने से मन, बुद्धि और आत्मा तीनों का समन्वय होता है। योग हमें जोड़ता है। योग हमें अपार ऊर्जा देता है। योग करने से हमारी दिनचर्या में शान्ति और सुकून रहता है।

जिलाधिकारी अस्मिता लाल ने भी एक पृथ्वी एक स्वास्थ्य के लिए योग के संदेश को आगे बढ़ाने का संदेश दिया। कहा, हर व्यक्ति को अपने जीवन में योग करना चाहिए। इसके अलावा जनपद के विभिन्न ब्लॉक, ग्राम, तहसीलों, पुलिस लाइन व पुलिस स्टेशनों पर अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें समस्त अधिकारियों, कर्मचारियों एवं स्थानीय व्यक्तियों द्वारा बढ़-बढ़कर प्रतिभाग किया गया। इस अवसर पर जनपद के तमाम अधिकारी व आम जनसमूह उपस्थित रहा।

विद्या भवन की छात्रा निशिता ने उत्तीर्ण की नीट परीक्षा

करीब 77.60 पर्सेंटाइल के साथ पाई सफलता

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

बागपत। खेकड़ा कस्बे के विद्या भवन पब्लिक स्कूल की छात्रा निशिता ने नीट परीक्षा में 77.60 पर्सेंटाइल अंक प्राप्त कर सफलता हासिल की है। इस उपलब्धि पर स्कूल परिवार ने उसे सम्मानित किया। कार्यक्रम में प्रिंसिपल अनीता शर्मा ने निशिता को सम्मानित करते हुए उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। कहा कि निशिता की इस सफलता से न केवल विद्यालय का नाम रोशन हुआ है बल्कि अन्य छात्रों के लिए भी यह प्रेरणा का स्त्रोत बनी है। वरिष्ठ शिक्षक धर्मपाल शर्मा, चंद्रमोहन दहिया, दीपक गोला, जयकुमार शर्मा, दीपा, मोनिका आदि शामिल रहे।

बागपत में जयंत चौधरी ने किया मल्टी स्पोर्ट्स आउटडोर कोर्ट का लोकार्पण

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

बागपत। उत्तर प्रदेश में बागपत के खेकड़ा कस्बा स्थित गांधी विद्यालय इंटर कॉलेज में युवाओं के खेल विकास को समर्पित बहुउद्देशीय क्रीड़ा हॉल व तरणताल, मल्टी स्पोर्ट्स आउटडोर का लोकार्पण बुधवार को केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) जयंत चौधरी ने किया। दरअसल, केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) जयंत चौधरी भारत सरकार द्वारा अपनी सांसद निधि से 53 लाख रुपए की धनराशि से खेकड़ा कस्बे के गांधी विद्यालय इण्टर कॉलेज, में बास्केटबाल एवं मल्टीस्पोर्टस आउटडोर कोर्ट निर्माण कराया गया था, जिसका लोकार्पण जयंत चौधरी, राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय तथा राज्य मंत्री, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, के द्वारा किया गया। इसके अलावा जमीनी स्तर पर खेल अवसंरचना के पुनरुत्थान और युवाओं के विकास को फिटनेस एवं कौशल प्रशिक्षण के माध्यम से प्रोत्साहित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए बागपत में भी नवीनीकृत बहुउद्देश्यीय क्रीड़ा हॉल एवं स्विमिंग पूल का उद्घाटन भारत सरकार के केंद्रीय राज्य मंत्री जयंत चौधरी ने किया। यह परियोजना एचडीएफसी बैंक के सीएसआर पहल के अंतर्गत प्लान इंडिया द्वारा क्रियान्वित की गई है, जिसमें स्पोर्ट्स, फिजिकल एजुकेशन, फिटनेस एंड लीजर सेक्टर स्किल काउंसिल एक रणनीतिक साझेदार के रूप में सम्मिलित है। केंद्रीय राज्यमंत्री ने नव-निर्मित स्विमिंग पूल क्षेत्र में शिलापट्ट का फीता काटकर अनावरण किया, तथा नवीनतम अवसंरचना का अवलोकन किया। इसके साथ ही उन्होंने बास्केटबॉल, कबड्डी, कुश्ती और बैडमिंटन जैसे खेलों के लिए उपयुक्त नव विकसित इनडोर हॉल का भी उद्घाटन किया।

इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री जयंत चौधरी ने कहा, मल्टी स्पोर्ट्स सेंटर, बागपत में बैडमिंटन, वॉलीबॉल और बास्केटबॉल के लिए स्विमिंग पूल और हॉल के नवीनीकरण का उद्घाटन करते हुए उन्हें गर्व हो रहा है, जिसे एचडीएफसी बैंक सीएसआर और स्पोर्ट्स एंड फिटनेस स्किल काउंसिल के माध्यम से 67 लाख रुपये की लागत से बनाया गया है।

उन्होंने कहा यह क्षेत्र में अपार खेल प्रतिभाओं को और मजबूत करने की दिशा में उठाया गया एक छोटा सा कदम है। केंद्रीय राज्य मंत्री ने सरकार, निजी क्षेत्र और नागरिक समाज के बीच सहयोग की सराहना की और कहा कि ऐसे सार्वजनिक-निजी भागीदारी मॉडल 'फिट और स्किल्ड इंडिया' के दृष्टिकोण को साकार करने में अहम भूमिका निभाते हैं। उन्होंने शिक्षा, खेल और कौशल विकास के एकीकरण के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को दोहराया ताकि युवा पीढ़ी सशक्त बन सके और राष्ट्र निर्माण में योगदान दे सके। इसके बाद जयंत चौधरी व सांसद डॉ राजकुमार सागवान ने स्पोर्ट्स परिसर में पौधारोपण भी किया। इस अवसर पर छपरौली विधायक अजय कुमार, जिलाधिकारी अस्मिता लाल, पुलिस अधीक्षक सूरज कुमार राय, अपर जिलाधिकारी पंकज वर्मा, मुख्य विकास अधिकारी नीरज कुमार श्रीवास्तव प्रमुख रूप से उपस्थित थे। एचडीएफसी बैंक की ओर से क्षेत्रीय प्रमुख अंजू सूद, एचडीएफसी परिवर्तन से अर्पणा, तथा संजय चतुर्वेदी (एचडीएफसी बैंक, बागपत) उपस्थित रहे। प्लान इंडिया की ओर से मुख्य कार्यकारी अधिकारी मोहम्मद आसिफ और राजेश राणा, मुख्य कार्यकारी अधिकारी तहसीन जाहिद, सुश्री गगनदीप ओबेरॉय और अमित खन्ना उपस्थित रहे।

नवागन्तुक उप गन्ना आयुक्त राजीव राय ने मेरठ परिक्षेत्र में ग्रहण किया कार्यभार

गन्ना भवन में अधिकारियों और कार्मिकों ने पुष्प गुच्छ भेंट कर माल्यार्पण से किया स्वागत

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

मेरठ। उत्तर प्रदेश शासन के निर्देशानुसार, श्री राजीव राय ने आज मेरठ परिक्षेत्र के उप गन्ना आयुक्त का महत्वपूर्ण कार्यभार ग्रहण कर लिया है। उनकी तैनाती से मेरठ परिक्षेत्र के गन्ना किसानों के कार्यों और चीनी उद्योग के विकास को नई गति मिलेगी। श्री राय चीनी उद्योग एवं गन्ना विकास विभाग के अन्तर्गत एक अनुभवी और कुशल अधिकारी हैं, जिन्हें उत्तर प्रदेश के विभिन्न प्रमुख गन्ना उत्पादक जिलों जैसे कुशीनगर, मऊ, बलिया, सिद्धार्थनगर, देवरिया एवं बरेली आदि प्रमुख गन्ना उत्पादक जनपदों में कार्य करने का व्यापक एवं बहुआयामी अनुभव प्राप्त है। ज्ञातव्य है कि श्री राय जनपद मेरठ में जिला गन्ना अधिकारी के पद पर भी कार्यरत रह चुके हैं। अपनी अनूठी कृषक हितैषी कार्यशैली के कारण पश्चिमी उत्तर प्रदेश में किसानों, जनप्रतिनिधियों के मध्य एक लोकप्रिय अधिकारी के रूप में श्री राय विख्यात हैं। वे गन्ने की खेती की बारीकियों, नवीनतम कृषि तकनीकों, फसल प्रबंधन, कीट एवं रोग नियंत्रण, तथा गन्ना मूल्य निर्धारण से संबंधित विभिन्न पहलुओं के गहन जानकार हैं। उनकी यह विशेषज्ञता निश्चित रूप से मेरठ परिक्षेत्र के गन्ना किसानों को आधुनिक कृषि पद्धतियों को अपनाने और अपनी उपज बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगी।

कार्यभार ग्रहण करने के उपरांत, श्री राय ने अपनी प्राथमिकताओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ह्यह्यमेरा सर्वोपरि लक्ष्य गन्ना किसानों के हितों का संरक्षण करना और उनकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिए हर सम्भव प्रयास करना होगा, मैं गन्ना विकास विभाग, चीनी मिलों के प्रतिनिधियों और गन्ना किसानों के साथ मिलकर एक समन्वित दृष्टिकोण के साथ काम करने के लिए तत्पर हूँ। हमारा प्रयास रहेगा कि किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य समय पर मिले और गन्ना भुगतान से सम्बंधित किसी भी समस्या का त्वरित समाधान किया जा सके।'' उन्होंने आगे कहा, हम परिक्षेत्र में गन्ना उत्पादकता बढ़ाने, नई स्वीकृत गन्ना किस्मों के प्रचार-प्रसार, उन्नत सिंचाई तकनीक (जैसे ड्रिप सिंचाइ पद्धति) को बढ़ावा देने और जल संरक्षण के उपायों एवं गन्ना कृषि के क्षेत्र में प्राकृतिक खेती पर विशेष ध्यान केंद्रित करेंगे। चीनी मिलों के सुचारू संचालन और उनके बीच बेहतर समन्वय स्थापित करने पर भी बल दिया जाएगा ताकि गन्ना आपूर्ति श्रृंखला निर्बाध बनी रहे। श्री राय के पास गन्ने की विभिन्न किस्मों, मिट्टी के स्वास्थ्य, उर्वरक प्रबंधन और गन्ना शोध से संबंधित गहरा ज्ञान है, जो उन्हें इस पद पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने में सक्षम बनाएगा। उनके नेतृत्व में मेरठ परिक्षेत्र में गन्ना विकास के नए आयाम स्थापित होने की उम्मीद है, जिससे न केवल किसानों को लाभ होगा बल्कि क्षेत्र की कृषि अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलेगी।

अतिचारी गुरु करेगा भारत का औद्योगिक विकास : पंडित के.ए. दुबे पद्मेश

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

कल्याणपुर। कैलाश होटल, आवास विकास, कल्यानपुर में कुण्डली भाग्य संस्था द्वारा आयोजित ज्योतिष संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए पदमेश इंस्टीट्यूट ऑफ वैदिक साइंसेस के अध्यक्ष पंडित के.ए. दुबे पदमेश ने कहा कि 2036 तक गुरू अतिचारी रहेगा जिससे औद्योगिक विकास अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय से भारत विश्व में अपना विशिष्ट स्थान बनाएगा।

श्री एस्ट्रो की संस्थापिका डॉ. स्वाती सक्सेना ने कहा ज्योतिष की लोकप्रियता पूरी तरह से बड़ रही है जब कोई विषय जन सामान्य द्वारा स्वीकार किया जाता है तो उसमे कुछ विक्रतियाँ भी आती हैं। आज वह देखने को भी मिल रही है। सस्ती लोकप्रिय के ज्योतिष को अपने में नियंत्रण करना होगा। नित्या श्रीवास्तव युवा ज्योतषी ने कहाँ आज सूर्य आर्दा नक्षत्र में प्रवेश किया है ऐसे मुहूर्त में ज्योतिष संगोष्ठी ओयाजित की गई जिससे ज्योत्तिष की लोकप्रियता और बड़ेगी। शिवम गौतम ने कहा यदि कुण्डली पूरी तरह से सही है तो उसके आधार पर सत-प्रतिशत भविष्यवाणी सही की जा सकती है। भोपाल से पधारे डॉ. हेमचंद्र पाण्डेय ने कहा कि ज्योतिष पूर्णतः विज्ञान है उसके आधार पर प्राकृतिक घटनाओं के बारे में अक्षरसः सत्य भविष्यवाणी की जा सकती है। कार्यक्रम के स्वगताध्यक्ष प्रेमचंद्र अग्निहोत्री ने कहा ज्योतिष वैदिक विज्ञान है और जब ज्योतषी अध्यात्मिक बल होता है और वैज्ञानि दृष्टि तो यह सत्य के निकट होता है। कार्यक्रम के संयोजिका डॉ सुगन्धा चोपड़ा ने आए हुए सभी अतिथियों को स्मृति चिह्न भेंट की।

किसी भी विद्यार्थी की आर्थिक स्थिति पढ़ाई में बाधा न बने: मुख्यमंत्री

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की सभी संस्थाओं के प्रमुखों के साथ गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ ने समीक्षा बैठक की

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

गोरखपुर। मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की संस्थाओं में पढ़ने वाले किसी भी विद्यार्थी की आर्थिक स्थिति उसकी पढ़ाई में बाधा न बनने पाए, इसे सुनिश्चित करना हर संस्था के प्रमुख का दायित्व है।

आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों का सहयोग कर उन्हें आगे बढ़ाने में कोई कोर कसर नहीं रहनी चाहिए। सीएम योगी शनिवार शाम गोरखनाथ मंदिर के सभाकक्ष में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद (एमपीएसपी) की सभी संस्थाओं के प्रमुखों के साथ संस्थाओं की गतिविधियों और भावी कार्ययोजना की समीक्षा कर रहे थे।

उन्होंने परिषद की सभी संस्थाओं के प्रमुखों का आह्वान किया कि वे अपनी दायित्व वाली संस्थाओं को समाज और राष्ट्र हित में युगानुकूल परिवर्तन का वाहक बनाएं। सीएम योगी ने कहा कि जैसे जीवन सिर्फ औपचारिकता नहीं है, उसी तरह कोई संस्था भी औपचारिकता मात्र नहीं है। हर संस्था का एक सुस्पष्ट ध्येय होना चाहिए।

हर संस्थाध्यक्ष का दायित्व है कि अपनी टीम के साथ पूरे मनोयोग से और लीक से हटकर कार्य करें। लकीर का फकीर बनने की बजाय हर संस्था सामूहिक प्रयास से स्वस्थ प्रतिस्पर्धा, अनुशासन, समय पालन और नवाचार करते हुए खुद की एक बुलंद पहचान बनाए। बैठक में उन्होंने परिषद की हर संस्था के लिए उत्कृष्ट परिसर संस्कृति पर विशेष जोर दिया।

उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद सिर्फ स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय या अस्पताल खोलने वाली संस्था नहीं है। बल्कि इसका ध्येय शिक्षा, स्वास्थ्य व अन्य सेवाओं के माध्यम से समाज तथा राष्ट्र के सामाजिक विकास में योगदान देना है। इस परिषद की नींव ही इसी भावना के साथ राष्ट्रीयता की भावना का पोषण करने के लिए, राष्ट्र हित में सुयोग्य नागरिक तैयार करने के लिए रखी गई। परिस्थितियां अनुकूल रही हों, या प्रतिकूल, परिषद इस समग्र लक्ष्य से कभी भी विचलित नहीं हुई।

मुख्यमंत्री ने कहा कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की संस्थाओं में अनुशासित परिसर संस्कृति को सदैव प्राथमिकता पर रखा है। परिषद की संस्थाओं ने इस मामले में अनुकरणीय प्रयास किया है।

परिसर में अनुशासन की भावना के साथ, स्वच्छता, हरियाली और सबका सबके प्रति सद्भाव रहे, इसका नियमित पर्यवेक्षण करना सभी संस्थाध्यक्षों की जिम्मेदारी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि संस्था में समय का पालन और अनुशासन सुनिश्चित करने के लिए संस्थाध्यक्ष पहले इसे खुद पर लागू करें। ऐसा होने पर दूसरे लोगों पर यह स्वतः स्फूर्त लागू होने लगता है।

उन्होंने सभी संस्थाध्यक्षों को विभिन्न प्रभार देने संबंधी कार्यों की नियमित समीक्षा के निर्देश देते हुए कहा कि सभी संबंधित प्रभारी को प्रतिदिन संपूर्ण परिसर का एक चक्कर जरूर लगाना चाहिए ताकि वह अपने प्रभार से संबंधित व्यवस्था सुनिश्चित कर सके।

उत्कृष्टता को स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के साथ निरंतर आगे बढ़ाते रहना होगा

बैठक में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की संस्थाओं के प्रमुखों का उत्साह बढ़ाते हुए सीएम योगी ने कहा कि इस परिषद की संस्थाओं ने हमेशा अपने-अपने कार्यक्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करते हुए समाज और राष्ट्र के हित में अपनी उपयोगिता प्रमाणित की है। इस उत्कृष्टता को स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के साथ निरंतर आगे बढ़ाते रहना होगा। उन्होंने परिषद की संस्थाओं की गतिविधियों की सराहना की और भावी लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अपनी शुभकामनाएं दीं।

प्रार्थना सभा विद्यार्थियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण

विद्यालयों में ग्रीष्मकालीन अवकाश में हुए कार्यों की समीक्षा करते हुए सीएम योगी जुलाई से प्रारंभ हो रहे शैक्षिक सत्र की तैयारियों की भी जानकारी ली और कहा कि एक जुलाई को विद्यालय खुलने पर विद्यार्थी जब प्रवेश करें तो उन्हें विद्यालय नया तथा परिसर स्वच्छ, सुंदर दिखना चाहिए। सीएम ने प्रार्थना सभाओं को विद्यार्थियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि इससे सकारात्मक, आध्यात्मिक और प्रभावपूर्ण वातावरण का निर्माण होता है। उन्होंने कहा कि विद्यालय में पुस्तकालय का समृद्ध होना व्यापक विद्यार्थी हित में होता है, इसलिए पुस्तकालय में भरपूर, अच्छी, रोचक और ज्ञानवर्धक पुस्तकें होनी चाहिए। मुख्यमंत्री ने शिक्षकों-कर्मचारियों के क्षमता संवर्धन हेतु प्रशिक्षण कार्यशालाओं के आयोजन के साथ यह निर्देश भी दिए कि छात्रों के करियर काउंसिलिंग पर भी विशेष और नियमित ध्यान दिया जाए।

शताब्दी वर्ष भव्य मनाने की अभी से करें तैयारी

बैठक में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के शताब्दी वर्ष 2032 को भव्य तथा ऐतिहासिक बनाने के लिए अभी से तैयारी शुरू करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना 1932 में पूर्वी उत्तर प्रदेश में शैक्षिक पुनर्जागरण और राष्ट्रीय मूल्यों के संरक्षण को लेकर की गई थी। यह परिषद अपने संस्थापक युगपुरुष ब्राह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज तथा विस्तारक राष्ट्रसंत ब्राह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज के मूल्यों, आदर्शों को संजोते हुए निरंतर प्रगतिमान है। सात साल बाद यह अपनी यात्रा के शताब्दी वर्ष में होगी। शताब्दी वर्ष तक हमें परिषद की संस्थाओं को एक प्रतिमान के रूप में स्थापित करना है। इसके लिए सभी संस्थाओं के प्रमुख को एक विस्तृत कार्ययोजना तैयार करके अभी से जुट जाना होगा।

उत्साह से दायित्व स्वीकार करें शिक्षक

सीएम योगी ने कहा कि शिक्षकों को विद्यालय से संबंधित जो भी प्रभार जैसे स्वच्छता, अनुशासन आदि मिलें, उसे उत्साहपूर्वक स्वीकार कर मिसाल पेश करना चाहिए। उन्होंने संस्थापकों के प्रति श्रद्धा और सम्मान का भाव रखने का मंत्र देते हुए कहा कि यह भाव आपकी संस्था और आपको आगे बढ़ाने में मददगार होगा। सीएम ने कहा कि विद्यालय में सकारात्मक माहौल, परिसर का गंदगीमुक्त, स्वच्छ और सुंदर होना आवश्यक है। किसी भी छात्र के अभिभावक विद्यालय में आएं तो परिसर की स्वच्छता, सुंदरता, अनुशासन और सकारात्मक माहौल देखकर प्रभावित होकर जाएं। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने बदलते समय के साथ सामंजस्य बनाने और अग्रणी बने रहने के नई तकनीकी और प्रौद्योगिकी को परखने और संस्था, विद्यार्थी हित के अनुरूप उसे अंगीकार करने पर बल दिया।

समीक्षा बैठक में ये रहे मौजूद

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के वरिष्ठ सदस्य रामजन्म सिंह, शैलेंद्र प्रताप सिंह, प्रमथनाथ मिश्र, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह, कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव, दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ ओम प्रकाश सिंह, एमपीपीजी कॉलेज जंगल धूसड के डॉ विजय चौधरी, दिग्विजयनाथ एलटी प्रशिक्षण महाविद्यालय के डॉ अजय कुमार पांडेय, गोरक्षनाथ संस्कृत विद्यापीठ के प्राचार्य डॉ. अरविंद कुमार चतुर्वेदी, महाराणा प्रताप कृषक इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य संदीप कुमार, महाराणा प्रताप इंटर कॉलेज सिविल लाइंस के प्रधानाचार्य डॉ. अरुण कुमार सिंह, महाराणा प्रताप बालिका इंटर कॉलेज की राधारानी पांडेय, एमपी पॉलिटेक्निक के अनिल प्रकाश सिंह, एमपी सीनियर सेकेंडरी स्कूल के पंकज कुमार, दुलहिन जगन्नाथ कुंअरि इंटर कॉलेज के रविंद्र कुमार शर्मा, महाराणा प्रताप महिला पीजी कॉलेज की डॉ सीमा श्रीवास्तव, एमपी कन्या इंटर कॉलेज की हर्षिता सिंह, एमपीआईटी के सुधीर अग्रवाल, गुरु गोरखनाथ विद्यापीठ के मनीष कुमार दूबे, दिग्विजयनाथ इंटर कॉलेज के केशव त्रिपाठी, गोरक्षपीठाधीश्वर महंत अवेद्यनाथ महाविद्यालय के डॉ रामपाल यादव, दिग्विजयनाथ इंटर कॉलेज के डॉ हरेंद्र यादव, दिग्विजयनाथ बालिका इंटर कॉलेज की सपना सिंह आदि मौजूद रहे।

- **समाज व राष्ट्र हित में युगानुकूल परिवर्तन की वाहक बनें परिषद की संस्थाएं : सीएम योगी**
- **समय का पालन स्वयं पर लागू करें संस्थाध्यक्ष, फिर सभी पर लागू करें : मुख्यमंत्री**

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हॉलिस्टिक हेल्थ एवं इंडियन योग एसोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में

11वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस जम्मू कश्मीर में मनाया गया

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

नई दिल्ली। 11वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस-2025 आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के मार्गदर्शन में नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हॉलिस्टिक हेल्थ (NIH). व इंडियन योगा एसोसिएशन (IYA) के संयुक्त तत्वावधान में डिग्री कॉलेज, अनंतनाग में बड़े उत्साह और उल्लास के साथ मनाया गया।

इस अवसर पर अनंतनाग के उपायुक्त, सहायक डीसी, एसएसपी, एसडीएम जैसे कई वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया और लगभग 1000 निवासियों और छात्रों ने भाग लिया।

सभी गणमान्य व्यक्तियों को डॉ. विनोद कश्यप, चेयरमैन ठक्कू ने मोमेंटो और अवॉर्ड देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर पहलगाम के मुख्य समन्वयक श्री जुल्फकार को भी युवा आइकन योग पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके अलावा, 9 वर्षीय बालक जिब्रान जुल्फिकार को भी योग में उसकी रुचि को देखते हुए चाइल्ड आइकॉन फॉर योग अवार्ड दिया गया। कार्यक्रम के बाद सभी प्रतिभागियों को जलपान भी कराया गया।

डॉ. विनोद कश्यप ने इस बात पर जोर दिया कि आई.वाई.ए. और एन.आई.एच. के संयुक्त प्रयासों से कश्मीर में योग को बढ़ावा दिया जा रहा है और भविष्य में भी स्वास्थ्य कल्याण जागरूकता के कार्यक्रम कश्मीर में जारी रहेंगे। इसके बाद काजीगुंड के हनीफिया एवरग्रीन पब्लिक स्कूल के 300 विद्यार्थियों को योगाभ्यास करवाया गया और सभी विद्यार्थियों को जलपान और सहभागिता प्रमाण पत्र भी दिए गए।

कार्यक्रम का समापन डॉ. विनोद कश्यप द्वारा उपस्थित सभी लोगों को उनकी भागीदारी और कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए धन्यवाद देने के साथ हुआ और कश्मीर के सभी जिलों में शीघ्र ही योग की ट्रेनिंग जारी रखने के लिए हर संभव सहायता देने का आश्वासन दिया।

कार्यक्रम को सफल बनाने व कोऑर्डिनेशन में योग एक्सपर्ट डॉ.नीलम चौधरी का विशेष सहयोग मिला!

इसके साथ ही एन. आई. एच. की टीम द्वारा दिल्ली के 'पूर्व दिल्ली खेल परिसर' में योग दिवस का आयोजन किया गया जिसमें 800 लोगों ने भाग लिया! योग एक्सपर्ट श्री सौम्य चौहान, श्री सुनील कनोजिया, कु.अदिति सैनी के कुशल नेतृत्व व दिशा निर्देशन में सभी प्रतिभागियों ने योग किया!

योगी सरकार का बड़ा फैसला: नगर पंचायतों को एक करोड़ तक के कार्य करने की स्वायत्तता

नगर विकास विभाग ने नगरीय निकायों को दी अधिक वित्तीय स्वायत्तता, एसओपी में हुआ संशोधन

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के मार्गदर्शन में नगर विकास विभाग ने प्रदेश के नगरीय निकायों को और अधिक वित्तीय एवं प्रशासनिक स्वायत्तता प्रदान करने की दिशा में एक अहम कदम उठाया है। नगर विकास विभाग ने वर्ष 2021 में जारी मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) में व्यापक संशोधन करते हुए संचालन प्रक्रिया को अधिक सरल और जवाबदेह बनाया है। इसके तहत अब नगर पंचायतों को 1 करोड़ और पालिका परिषदों को 2 करोड़ रुपये तक के कार्य स्वयं करने की स्वायत्ता होगी। साथ ही नगरीय निकायों द्वारा करवाये जाने वाले निर्माण कार्यों में होने वाली गड़बड़ी या गुणवत्ता में कमी के लिए पचास-पचास प्रतिशत राशि संबंधित ठेकेदार और प्रशासनिक अधिकारी से वसूलने का भी प्रावधान किया गया है। इसके अतिरिक्त नगरीय निकायों की विकास प्रक्रिया को तेज करने के लिये नई तकनीकि के इस्तेमाल पर भी जोर दिया जाएगा।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मंशा के अनुरूप प्रदेश के नगर विकास विभाग ने 74वें संविधान संशोधन के मुताबिक नगरीय निकायों को अधिक वित्तीय एवं प्रशासनिक स्वायत्ता प्रदान की है। नगर विकास विभाग ने 2021 में जारी मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) में जरूरी बदलावों को मंजूरी दी है। इसके तहत विभाग ने बाजार दरों में वृद्धि को ध्यान में रखते हुए नगरीय निकायों की वित्तीय सीमा को पुनः निर्धारित किया है। जिसके अनुसार अब प्रदेश की नगर पंचायतें 1 करोड़ और नगर पालिका परिषदें 2 करोड़ रुपये के निर्माण एवं अन्य विकास कार्य करने की अनुमति प्रदान की है। जबकि अभी तक उन्हें केवल 40 लाख रुपये तक के कार्य कराने की ही अनुमति थीनगर विकास विभाग ने प्रमुख सचिव अमृत अभिजात ने कहा कि एसओपी में संशोधन से स्थानीय नगरीय निकायों को न केवल वित्तीय स्वायत्तता मिलेगी, बल्कि विकास कार्यों की गुणवत्ता और पारदर्शिता भी सुनिश्चित होगी। यह नगरीय प्रशासन को जनहित में अधिक प्रभावी बनाएगा। नगर विकास विभाग ने नगरीय निकायों के निर्माण एवं विकास कार्यों में गड़बड़ी या गुणवत्ता में कमी के लिए संबंधित ठेकेदार, अभियंता और प्रशासनिक अधिकारी की जवाबदेही को नये सिरे से तय किया है।

एसओपी में किए गए प्रमुख संशोधन के अनुसार, किसी भी निर्माण या विकास कार्य में गुणवत्ता की कमी या मापन में त्रुटि के कारण यदि अतिरिक्त भुगतान होता है, तो उसकी वसूली संबंधित ठेकेदार से 50 प्रतिशत और शेष 50 प्रतिशत राशि अभियंता एवं प्रशासनिक अधिकारियों से वसूल की जाएगी। वसूली की प्रक्रिया जिलाधिकारी द्वारा निर्धारित व संचालित की जाएगी। यदि वसूली न हो सके तो इसे भू-राजस्व की तरह वसूलने का प्रावधान है। एसओपी में हुए संशोधन में नगरीय निकायों द्वारा विकास कार्यों के लिये आधुनिक तकनीकी के इस्तेमाल पर भी जोर दिया गया है।

दुनिया का सबसे प्राचीन सोनभद्र का जीवाश्म पार्क यूनेस्को की धरोहर में शामिल

सीएम योगी के इको टूरिज्म के प्रयासों को दिख रहा असर, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर फॉसिल्स पार्क को मिली ख्याति

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

लखनऊ। योगी सरकार ने दुनिया के सबसे प्राचीन जीवाश्म पार्क में शुमार सोनभद्र के सलखन फॉसिल्स पार्क को विश्व धरोहर की संभावित सूची में शामिल करने में बड़ी उपलब्धि हासिल की है। सलखन फॉसिल पार्क का विवरण अब यूनेस्को की वेबसाइट पर देखा जा सकता है। इससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन को नयी उड़ान मिलेगी। फिलहाल सलखन फॉसिल्स पार्क को यूनेस्को की वर्ल्ड हेरिटेज की टेंटेटिव लिस्ट में शामिल किया गया है। वहीं सीएम योगी के निर्देश के क्रम में इको टूरिज्म डेवलपमेंट बोर्ड द्वारा फॉसिल्स पार्क को यूनेस्को की स्थायी सूची में शामिल करने के लिए डोजियर तैयार किया जा रहा है, जिसे जल्द भारत सरकार को सौंपा जाएगा। माना जा रहा है कि आगामी 2 वर्षों में फॉसिल्स पार्क यूनेस्को की स्थायी सूची में शामिल हो सकता है। प्रमुख सचिव पर्यटन मुकेश मेश्राम ने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ प्रदेश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए लगातार अहम कदम उठा रहे हैं। इसके साथ ही प्रदेश में इको टूरिज्म को भी बढ़ावा देने के लिए प्रयास किये जा रहे हैं। सीएम योगी के प्रयासों का ही नतीजा है कि इको पर्यटन विकास बोर्ड ने हाल ही में कतर्नियाघाट वन्यजीव अभयारण्य से दुधवा टाइगर रिजर्व तक रेल कनेक्टिविटी प्रदान करने वाली पर्यटक ट्रेन में विस्टाडोम कोच का संचालन शुरू किया है। वहीं सीएम योगी के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश इको पर्यटन विकास बोर्ड ने दुनिया के सबसे प्राचीन जीवाश्म पार्क में शुमार सोनभद्र के रॉबर्ट्सगंज से लगभग 15 किलोमीटर दूर सलखान गांव के पास स्थित सलखन फॉसिल्स पार्क को यूनेस्को की वर्ल्ड हेरिटेज की टेंटेटिव लिस्ट में दर्ज कराने की बड़ी उपलब्धि हासिल की है।

उन्होंने बताया कि इसके लिए विभाग की ओर से एक साल से प्रयास किया जा रहा था। फॉसिल्स पार्क को यूनेस्को की लिस्ट में दर्ज कराने के लिए 26 जून 2024 को मुख्यमंत्री के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश इको पर्यटन विकास बोर्ड एवं राजधानी स्थित बीरबल साहनी पुरावनस्पति विज्ञान संस्थान के मध्य एमओयू साइन किया गया था। इसके तहत संस्थान की ओर से फॉसिल्स पार्क पत्थरों पर मौजूद जीवाश्म का अध्यन किया गया, जिसमें 1400 मिलियन वर्ष पुराने शैवाल और स्ट्रॉमैटोलाइट्स के जीवाश्म पाए गए, जो धरती पर प्राचीन जीवन के प्रमाण देते हैं। इन साक्ष्यों के आधार पर यूनेस्को की सूची में पार्क को शामिल करने के लिए अप्लाई किया गया। पृथ्वी की प्राचीन धरोहर में बढ़ती राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय रुचि के बीच, सलखन फॉसिल पार्क, जिसे सोनभद्र फॉसिल्स पार्क भी कहा जाता है, यूनेस्को विश्व धरोहर सूची में एक स्थायी स्थान प्राप्त करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठा रहा है।

- **पार्क प्राचीन बलुआ पत्थर में संरक्षित सबसे पुरानी और सर्वश्रेष्ठ स्ट्रॉमैटोलाइट्स का है घर, जो लगभग 1.4 अरब वर्ष पुरानी**
- **इको टूरिज्म डेवलपमेंट बोर्ड पिछले एक साल से यूनेस्को की सूची में दर्ज कराने के लिए कर रहा था प्रयास**

आगामी 2 वर्षों में यूनेस्को की स्थायी सूची में दर्ज हो सकता है सलखन फॉसिल्स पार्क

पर्यटन निदेशक प्रखर मिश्र ने बताया कि किसी भी धरोहर को यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल करने के लिए पहले उसे अस्थायी की सूची में शामिल किया जाता है। इसके बाद स्थायी सूची में दर्ज कराने के लिए डोजियर तैयार कर आगे की प्रक्रिया होती है। इस प्रक्रिया में करीब एक साल का समय लगता है। साथ ही यूनेस्को की टीम आ कर उस स्थान का अध्यन करती है, जिसे यूनेस्को की स्थायी सूची में शामिल किया जाता है। पर्यटन निदेशक ने बताया कि सोनभद्र के फॉसिल्स पार्क को यूनेस्को की स्थायी सूची में दर्ज कराने के लिए डोजियर तैयार किया जा रहा है, जिसे जल्द ही भारत सरकार को सौंप दिया जाएगा। इसके बाद इसे यूनेस्को को भेजा जाएगा। उन्होंने उम्मीद जतायी है कि आगामी 2 वर्षों में फॉसिल्स पार्क को यूनेस्को की स्थायी सूची में स्थान मिल सकता है। इससे जहां अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रदेश को ख्याति प्राप्त होगी, वहीं वैश्विक स्तर पर पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने बताया कि सलखन फॉसिल पार्क का विश्व के अन्य जीवाश्म पार्कों से तुलनात्मक अध्ययन भी किया गया है।

भारतीय सनातन संस्कृति का गौरव दिवस योग दिवस के रूप में मनाया गया

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

मोदीनगर। पतंजलि वैलनेस सेंटेर मोदीनगर एवं आयुष विभाग, गाजियाबाद के संयुक्त योग महोत्सव सप्ताह के प्रथम दिन का कार्यक्रम पतंजलि वैलनेस सेंटेर मोदीनगर में 300 से अधिक व्यक्ति के साथ बड़े उत्साह के साथ मनाया गया।

भारतीय सनातन संस्कृति का गौरव दिवस योग दिवस के रूप में मनाया जा रहा है ।जिसका श्रेय हमारे ऋषि व मुनि व योगी तपस्वियों से लेकर वर्तमान के योग ऋषि स्वामी रामदेव महाराज व अन्य योगी आत्मा व योग संगठन के जमीनी कार्यकर्ता एवं अति महत्वपूर्ण हमारे वर्तमान के प्रधानमंत्री जी को जाता है।

पतंजलि वैलनेस सेंटेर मोदीनगर के सेवा प्रमुख स्वामी आरोग्यदेव के द्वारा कॉमन योग प्रोटोकॉल का प्रदर्शन मंच से किया और मार्गदर्शन में पतंजलि संगठन, पुरुषार्थ क्रांतिकरी संगठन के कार्यकताओं ने दिन-रात मेहनत करके प्रचार प्रसार एवं उत्तम व्यवस्था नगर वासियों के लिए की।

इस कार्यक्रम में हमारे मुख्य अतिथि के रूप में मोदीनगर तहसील की विधायक डॉक्टर मंजू सिवाच, क्षेत्रीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी अधिकारी डॉ. अशोक कुमार राना, जिला होम्योपैथिक चिकित्सा अधिकारी डॉ. पंकज त्यागी , जिला विकाश अधिकारी प्रज्ञा श्रीवास्तव और आयुष विभाग के चिकित्सा अधिकारी एवं सभी स्टाफ टीम उपस्थिति रही। समाज के अन्य प्रतिष्ठित महानुभावों की उपस्थिति भी रही जिसमें की मुख्य रूप से अमित अग्रवाल व्यापार संगठन, राजेन्द्र कौशिक , प्रमोद शर्मा (वकील), बबली गुज्जर, पप्पन शर्मा, सुमरेस शर्मा, करतार सिंह भट्टी, प्रेमचंद सैनी, सुमन भट्टी , वीणा शर्मा, मोहीनी कोसारी, करुणा गुलाठी, ललित, रेखा सिंह, बलराम सिंह (केपटन), सत्यप्रकाश शर्मा , दयावती देवी जी भूमि दानदाता। मुख्य अतिथि विधायक डॉ मंजू सिवाच ने प्राकृतिक दिनचर्या व योग अभ्यास और सात्विक आहार का महत्व सरल शब्दों में सबके सामने रखा।

छाया पब्लिक स्कूल के ईशान शर्मा ने नीट परीक्षा पास कर किया क्षेत्र का नाम रोशन

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

मोदीनगर। गोविंदपुरी स्थित छाया पब्लिक स्कूल मैं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया जिसमें नीट परीक्षा में जोरदार प्रदर्शन करने वाले ईशान शर्मा जिनका सरकारी मेडिकल कॉलेज में चयन हुआ है उनके सम्मान में विद्यालय द्वारा आशीर्वाद समारोह का आयोजन किया गया विद्यालय के प्रबंधक अखिलेश द्विवेदी द्वारा ईशान को माला पहनाकर व स्मृतिचिन्ह देकर उनके उज्जवल भविष्य की कामना की विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉक्टर अरुण त्यागी ने बताया कि ईशान शर्मा पढ़ाई के साथ-साथ खेल व अन्य गतिविधियों में भी सदैव आगे रहा है विलक्षण प्रतिभा के धनी ईशान शिक्षा व संस्कारों से परिपूर्ण है ईशान के पिता डॉ नीरज शर्मा व माता डॉ शिखा मोदीनगर शहर के प्रसिद्ध डॉक्टर हैं।

ईशान कि कामयाबी पर सांसद राजकुमार सागवान, विधायक डॉ मंजू सिवाच, नगर पालिका अध्यक्ष विनोद वैशाली डॉ अनिल त्यागी सहित सभी गणमान्य व्यक्तियों ने उनको बधाई दी व ।उज्जवल भविष्य की कामना की

बार एसोसिशन मोदीनगर के चुनाव में अधिवक्ता संजय मुदगल ने किया प्रचार

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

मोदीनगर। बार एसोसिएशन के चुनाव प्रचार में अधिवक्ता संजय मुदगल ने प्रत्याशी सचिव पद पर तहसील परिसर मोदीनगर में सभी अधिवक्ताओं के चैम्बर पर जाकर किया प्रचार। सभी अधिवक्ताओं की समस्याओं को सुना, सभी अधिवक्ताओं में उत्साह का माहौल है। सचिव पद प्रत्याशी संजय मुदगल ने कहा कि अगर प्रशासन व पुलिस प्रशासन द्वारा किसी भी अधिवक्तागणो को प्रताडित किया गया या उनकी समस्याओं का निस्तारण समय रहते नही किया गया तो सभी अधिवक्ता एक जुट होकर प्रशासन के खिलाफ मोर्चा खोलेगें।

राष्ट्र निर्माण का संदेश लेकर निकाली जा रही गौराष्ट्र यात्रा का मोदीनगर में हुआ भव्य स्वागत

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

मोदीनगर। भारत की प्राचीन गौ-संस्कृति और ग्राम आधारित अर्थव्यवस्था के पुनरुत्थान के संकल्प के साथ ऋषिकेश से आरंभ हुई 'गौराष्ट्र यात्रा' आज मोदीनगर पहुँचने पर में समाजसेवी एवं भाजपा के वरिष्ठ नेता स्वदेश जैन एवं युवा व्यवसायी गौरव जैन के परिवार द्वारा भव्य स्वागत किया गया। गौराष्ट्र यात्रा यात्रा की शुरूआत ऋषिकेश में संतजनों के आशीर्वाद से हुई, इसके बाद हरिद्वार स्थित हर की पैड़ी पर माँ गंगा की आरती कर पवित्र गंगाजल को साथ लेकर संकल्प लिया गया। रुड़की और शामली से होते हुए यात्रा अब ऐतिहासिक मोदीनगर पहुँची।

एक ऐसी भूमि जो 1857 की क्रांति, किसान चेतना और गौ-परंपरा की मिसाल रही है। यहाँ यात्रा का भव्य स्वागत जैन स्वीट्स प्रतिष्ठान पर हुआ, जहाँ स्वदेश जैन और गौरव जैन ने समर्पित भाव से टीम का अभिनंदन किया। यात्रा के नेतृत्वकर्ता भारत सिंह राजपुरोहित अध्यक्ष जीव जंतु कल्याण एवं कृषि शोध संस्थान ने कहा कि गौमाता केवल आस्था का विषय नहीं, राष्ट्र के भविष्य और सुरक्षा की आधारशिला हैं। यह यात्रा केवल धार्मिक नहीं, एक सामाजिक और आर्थिक पुनर्जागरण का प्रयास है।

इस अवसर पर परम गौभक्त स्वदेश जैन, गौरव जैन एवं अंकित शर्मा भी उपस्थित रहे, जिन्होंने इस मुहिम का सक्रिय समर्थन किया। गांव, गौ, संस्कृति और समृद्धि की ओर भारत सिंह ने बताया किद्यगौराष्ट्र यात्रा का उद्देश्य केवल गौसंवेदना फैलाना नहीं, बल्कि युवाओं को गौ-उद्योग से जोड़ना, महिला सशक्तिकरण, जैविक खेती और पर्यावरणीय संतुलन की दिशा में राष्ट्रीय जागरूकता उत्पन्न करना भी है। यह यात्रा ग्राम स्वराज, आत्मनिर्भर भारत और सतत विकास जैसे मूल्यों को धरातल पर साकार करने की दिशा में अग्रसर है। अब दिल्ली की ओरः राष्ट्रीय अभियान की मांग यात्रा अब मोदीनगर होते हुए दिल्ली की ओर बढ़ेगी, जहाँ देश के जनप्रतिनिधियों व नागरिकों से संवाद कर यह अपील की जाएगी कि गौ रक्षा को एक राष्ट्रव्यापी अभियान का स्वरूप दिया जाए। मीडिया माध्यमों का हम हार्दिक आभार प्रकट करते हैं, जिनके सहयोग से यह पुनीत संदेश देशभर के करोड़ों जनमानस तक पहुँच रहा है।

मोदी आईफा आर्ट गैलरी ने कलाकारों को किया सम्मानित

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

मोदीनगर। गैलॉर्ड बिल्डिंग स्थित मोदी आईफा आर्ट गैलरी मैं आयोजित कला प्रदर्शनी के सातवें दिन मोदी आईफा गैलरी द्वारा कलाकारों को सम्मानित किया गया ।

आज के कार्यक्रम के अतिथिगण मोहित जैन(नागिन पब्लिकेशन मेरठ) एवं आईफा संस्थान की सचिव नंदिनी मल्होत्रा ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया । मोदी आईफा आर्ट गैलरी में जिन कलाकारों ने अपनी स्व- निर्मित कलाकृतियों को प्रदर्शित किया था उन सभी कलाकारों को भागीदारी प्रमाण पत्र, गैलरी का कैटलॉग एवं प्रतीक चिन्ह देकर अतिथिगणों द्वारा सम्मानित किया ।इस प्रदर्शनी में 40 कलाकारों द्वारा अपनी स्व-निर्मित कलाकृतियां का प्रदर्शन किया ।

जिसमें डॉ महावीर सिंह, डॉ रीता मोहन , सुनील कुमार, अरुंधति महतो, अमित कुमार, डॉ. रूचि विद्यार्थी, शीतल रानी, बद्रीनाथ सतपथी, अंकित कुमार, ऋतिक चपराना, विशाल चतुवेर्दी, मनीष राज, चंचल ठाकुर, आदित्य, अवंतिका, रिया गौतम, तन्मय गुप्ता, कशिश, करण आर्य , स्वीटी, नव्या शर्मा, कशिश वर्मा, पारुल, आयुषी, शिवांगी शर्मा, पूनम, मेघा दीक्षित, मुस्कान, अंश कुमार, राशी, सिद्धार्थ गौतम, आकाश तोमर, खुशी गिरधर, नैना हाल्दानिया, स्वीटी माहली, सुप्रिया कुमारी, प्रशांत झा ने अपनी स्व- निर्मित कलाकृतियों को प्रदर्शनी में प्रदर्शित किया। यह प्रदर्शनी 9 जून 2025 से प्रारंभ हुई थी इस प्रदर्शनी को देखने के लिए कला शिक्षक, स्कूल के प्रिंसिपल, कला प्रेमी , छात्र-छात्राएं एवं उनके अभिभावक, सामाजिक संस्थाएं, राजनीतिक पार्टियों के नेता आदि की अपार भीड़ थी` दर्शक पेंटिंगो को काफी अच्छी कीमत पर खरीद रहे हैं जो इस गैलरी की लोकप्रियता को दशार्ता है।

संस्थान की सचिव नंदनी मल्होत्रा ने इस मोदी आईफा आर्ट गैलरी को बनाने एवं इस शानदार मुकाम तक पहुंचाने के लिए डॉ.संघर्ष शर्मा एवं उनकी टीम को धन्यवाद किया ।संस्थान के मैनेजर डॉ. संघर्ष शर्मा ने बताया यह गैलरी नए उभरते कलाकारों के लिए एक कला मंच प्रदान करने के लिए यह गैलरी सेठ सतीश कुमार मोदी एवं आभा मोदी के सौजन्य से स्थापित की इस आर्ट गैलरी को बनाने में एवं प्रदर्शनी को सफल बनाने में संस्थान के प्रशासनिक अधिकारी भोतेंद्र कुमार, अमित कुमार बंसल, डॉ. रूचि विद्यार्थी, प्रीति शर्मा, दीपांशु, आभा शर्मा, शीतल, प्रशांत झा, सोनू, सतीश यादव आदि का विशेष सहयोग रहाआज की कार्यक्रम में आर.सी शर्मा , भाजपा नेता प्रदीप बॉस भी उपस्थित थे।

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया

यू.पी. ऑब्ज़र्वर

मोदीनगर। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव द्वारा वी0वी0आई0पी0 एड्रेसेज राजनगर एक्टेंशन में आयोजित किया गया। महिला अपनी समस्या टोल फ्री नम्बर 51100 पर करे चंचल गुप्ता पैनल अधिवक्ता। गाजियाबाद- उत्तर प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण लखनऊ के निर्देश पर जिला जज आशीष गर्ग अध्यक्ष जनपद न्यायधीश जिला विधिक सेवा प्राधिकरण गाजियाबाद के नियंत्रण कुमार मिताक्षर सचिव/अपर जिला जज, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण गाजियाबाद के आदेश की देखरेख पर प्रथम सुगम्यता समिति के उददेश्यय हेतू दिव्यांग व्यक्तियों महिलाओं और वरिष्ठ नागरिकों के लिए अधिक सुगम्यता का मार्ग प्रशस्त करना है। निर्मित वातावरण में समान पहुंच एंव समावेशित सुनिश्चित करना दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों ओर कल्याण को बढावा देने का एक मूलभूत पहलू है। शिविर का संचालन अधिवक्ता पैनल अधिवक्ता डा0 सविता त्यागी व प्रवीण चौधरी द्वारा किया गया। शिविर की अध्यक्षता कुमार मिताक्षर सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण गाजियाबाद के द्वारा कि गयी। जिसमे जनता की समस्याए सुनी गयी। पैनल अधिवक्ता सविता त्यागी, व पैनल अधिवक्ता चंचल गुप्ता, ने वरिष्ठ नागरिको को उनके कानूनी अधिकारों, सरकारी योजनाए, वृद्धावस्था पेंशन योजना, माता पिता और वरिष्ठ नागरिकों के भरणपोषण एंव कल्याण अधि0 2007 तथा भारतीय संविधान के तहत अनु0 21,41 के तहत उनके मूल अधिकारो तथा हेल्पालाईन नं0 51100 नाल्सा से अवगत कराया। विचित्र कुमार असिस्टेंट लीगल एण्ड डिफेन्स काउंसिल अधिवक्ता द्वारा बताया गया कि जिला विधिक सेवा प्राधिकरण महिलाओं किस प्रकार साहयता कर सकती है। महिलाओं व गरीब व्यक्तियो को किस प्रकार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण से निशूल्क अधिवक्ता मिल सकते है। शिविर में पैनल अधिवक्ता चंचल गुप्ता तथा पैनल अधिवक्ता सुमन सिंह भी रही। इसमें अधिवक्ता अरूण भैया तथा अधिवक्ता संजय मुदगल, अधिवक्ता संगीता, वी0वी0आई0पी0 एड्रेसेज के अध्यक्ष यज्ञदत्त त्यागी, सचिव राजीव शर्मा, नितिन त्यागी, 202 व मुकेश त्यागी, आदि शिविर मे उपस्थित रहें।